ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-15 नवम्बर-I, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

जहाँ रुहानी फ़ील है वहाँ व्यक्ति स्वत:हील है

अहमदाबाद। जब आपके पास हार्ट ब्लॉकेजेज़ वाले पेशेन्ट आते हैं तब उन्हें ये बताया जाता है कि आपको ब्लॉकेज है और आपको बाई पास करवाना है, किन्तु अभी आप यह भी ज़रूर बतायें कि ये ब्लॉकेजेज़ यहाँ दिल में नहीं बल्कि आत्मा में पहले ब्लॉकेज है, उसे खत्म करना है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'पीसफुल माइंड एंड ब्लीसफुल लाइफ' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में लोकप्रिय आध्यात्मिक वक्ता ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये।

'डिजिटल एक्स रे ऑफ सेल्फ एंड ईज़ी लाइफ फॉर बिज़ी पिपल' विषय पर उन्होंने कहा कि जब पेशेन्ट आपके पास आता है तब वो एक तो दर्द में होता है, दूसरा उसको डॉक्टर के ऊपर पूरा विश्वास रहता है और तीसरा वो आपके सामने पूरा समर्पण हो जाता है। सभी डॉक्टर्स अपने पेशेन्ट के प्रेसक्रिप्शन में यह भी लिखें कि इन दवाइयों के साथ आपको गुस्सा नहीं करना है, शांत रहना है। ऑपरेशन थियेटर में 2 मिनट साइलेन्स में रह कर फिर ऑपरेशन शुरु करें।

उन्होंने भोजन की शुद्धता व उसके प्रति छिपे भावनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि - एक होता है रेस्टोरेन्ट का खाना, दूसरा है घर में नौकर के हाथ का खाना, तीसरा है घर में माँ के हाथ का खाना और चौथा है मंदिर का प्रसाद खाना। इन चार प्रकार के खाने में अंतर है। रेस्टोरेन्ट वाले को धंधा करना है, वो भोजन बनाता है, उसके पीछे उसका पैसे कमाने का आशय

अहमदाबाद। 'पीसफुल माइंड एंड ब्लीसफुल लाइफ' विषयक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी। सभा में उपस्थित शहर के डॉक्टर्स प्रोफेशन से जुड़े लोग।

है। दूसरा घर में नौकर जो खाना पका रहा है, वो अपनी नौकरी कर रहा है। तीसरा घर में जो माँ खाना बना रही है, वो उस भाव से बना रही है कि मैं अपने परिवार के लिये भोजन बना रही हूँ और चौथे प्रकार का मंदिर का भोजन, जो एक प्रसाद है, उस भोजन से आत्मा को शक्ति मिलती है।

उन्होंने बैलेन्स शीट ऑफ लाइफ विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अगर हमारे विचार, कर्म और व्यवहार अलग-अलग होंगे तो हमारे जीवन रूपी बैलेन्स शीट भी अलग-अलग बन जायेंगे। हमें किसी की कॉपी नहीं करनी है, हर एक आत्मा का अपना संस्कार है, अपना पार्ट है। हमें किसी के साथ यह स्पर्धा नहीं करनी है कि मुझे इससे आगे जाना है या मुझे इससे भी अच्छा या बेहतर बनना है क्योंकि आज आप एक व्यक्ति से आगे जाने की कोशिश करेंगे, उस एक व्यक्ति से अच्छा परफॉर्म करेंगे तो फिर दूसरा व्यक्ति भी आपको तुरंत तैयार मिल जायेगा जो आपको इस स्पर्धा में और आगे ले जाने के लिए खड़ा होगा। इस रेस में इसी प्रकार से परफॉर्म करते जाने से हम आज अपने मूल्यों से नीचे गिरते गये हैं। एक दूसरे से रेस करने के बजाये हम जहाँ हैं वहाँ से हम खुद ही आगे बढ़ें। उन्होंने आगे कहा कि जो आपको आता है वो औरों को सिखा दो तो वो भी आगे बढ़ जायेगा। आप जो एनर्जी दूसरों को देंगे तो वही एनर्जी वापस आपके पास आयेगी। अगर आप ब्लैक एनर्जी देंगे तो ब्लैक ही आपको वापस मिलेगी। अगर आप वाइट एनर्जी भेजेंगे तो आपके पास वाइट एनर्जी आयेगी। तो जितनी बार हम वाइट एनर्जी भेजेंगे उतना फायदा किसको होगा? हमें ही होगा।

कार्यक्रम के बाद ए.एम.ए. की प्रेसीडेंट स्मिता शाह को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सरला।

दिल्ली के सुप्रसिद्ध कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मोहित गुप्ता ने बताया कि आज मानव सोच कुछ और रहा है और कर कुछ और रहा है। मुझे करना है, मुझे करना है, करना है, मुझे पता है, मुझे मालूम है। लेकिन बाहर का प्रभाव हमें प्रभावित कर जाता है और हम बदल जाते हैं। हमारा रिमोट कंट्रोल किसके पास होना चाहिये? हमारे पास

-- शेष पेज 11 पर

इन साइड पर...

"हमने पवित्रता को अपनाया है"

मन रूपी साम्राज्य को बुद्धि रूपी सम्राट ही नियंत्रित करेगा

कोरे कागज़ सा मन...

सावधान! कहीं सोच ही शत्रु तो नहीं?

मूल्यों की री-इंजीनियरिंग की आवश्यकता

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। हम सभी जानते हैं कि हमारे पूर्वज देवता थे, लेकिन आज हम लेने वाले बन गये। आज के जीवन में असंतुष्टता एवं निराशा का मूल कारण ही ये है, कि हम दूसरों से सिर्फ लेने की अपेक्षा रखते हैं, जबकि जीवन की असली खुशी तो देने में है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इंजीनियर्स डे के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. बृजमोहन ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि प्रकृति की भी कोई चीज़ उसके अपने लिए नहीं है, उसका असली महत्व दूसरों के लिए उपयोग में आना है। जीवन में जितनी संग्रह वृत्ति बढ़ती जा रही है, उतनी ही विकृतियाँ भी बढ़ती जाती हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमारा देश शुरु से ही आध्यात्मिक रहा है, जिसको कि आज सारा विश्व भी समझने का प्रयास कर रहा है। हमारी संस्कृति दातापन की रही है, वो तो अभी कुछ सदियों में ये गिरावट आई है। अब पुन: हमें ---शेष पेज 5 पर...

कोरे कागज़ सा मन...

आध्यात्मिक आकाश टिमटिमाते अनेक सितारों से भरा है। यह एक-एक सितारा एक सूर्य या तो एक महासूर्य है, और हरेक के आसपास एक अपना अभामण्डल ग्रह नक्षत्र से भरा एक अद्भुत जगत है। यहां पर बुद्ध, कृष्ण, कबीर, मीरा, पतंजलि, गोरेख, पालटु, कबीर, जनक, अष्टावक्र, नानक और नागार्जुन उपनिषद काल के अनेक ऋषि-महर्षि आंखे बंद हो जाये ऐसी महारोशनी से टिम-टिमाता ये जगत है।

इस देश में वर्षों से दिशाहीन, और खुदगर्ज़,स्वार्थी के हाथ में यह गौरवशाली देश का भविष्य भंवर मे फंसा हुआ है। दु:ख से हृदय भर जाये ऐसी यह स्थिति है। फिर भी, कहीं भी कुछ भी कोई अशुभ चिन्ह नहीं दिखता। हाँ, आशा से देख सकें ऐसा यह जगत है, जहां से धर्म और अध्यात्म की कोई आशा की किरण इस देश पर उतर सकती है। क्योंकि इस जगत में कोई स्पर्धा, ऊँचे आसन पर बैठने की स्पर्धा या मदहोश, या तड़फते लोगों की छाती पर सवार होकर खून चूसने जैसी हीनता नहीं है। नम्रता, निरहंकारिता, करुणा और सद्भावना का पाठ सिखानेवाला यह एक अनोखा जगत है। इसीलिए ही प्रत्येक सच्चे संत के जीवन में से कोई न कोई दिव्य सुवास उठती दिखाई पड़ती है।

- ब्र.कु. गंगाधर

महाराष्ट्र में ऐसे ही एक त्रिपुटी संत हुए, जिनका नाम एकनाथ, निवृत्तिनाथ और मुक्ताबाई था। लोग अपार आदर और भक्ति भाव से उन्हें देखते थे।

एक बार ऐसा हुआ कि संत एकनाथ ने पत्र लिखा, पत्र में सिर्फ कोरा कागज़ था। कुछ भी लिखे बिना ही कोरा कागज लेकर संदेशवाहक निवृत्तिनाथ के पास पहुँचा, कवर खोलकर कागज़ निकाला और अत्यंत रसपूर्वक उस कागज़ को पढ़ रहे हों ऐसा प्रतीत हो रहा था। शब्द तो उसमें कोई था ही नहीं, लेकिन शून्य में डूब कर आनंद-विभोर हो रहे हों उसी तरह की उनके चेहरे पर प्रसन्नता थी। स्वयं पत्र पढ़कर फिर उस पत्र को मुक्ताबाई को दिया और पढ़ने को कहा। तो मुक्ताबाई ने भी उस पत्र को आनंद और अहोभाव से पढ़ा। दोनों बहुत प्रसन्न हुए और फिर संदेशवाहक को कहा - उत्तर में एक यह हमारा पत्र भी लेकर जाइए। वही प्रतिकृति उन्होंने संदेशवाहक को दिया और कहा कि आप उन्हें वापिस पहुँचाएं।

संदेश ले जाने वाले को आश्चर्य हुआ क्योंकि वो जैसा पत्र लाया था वैसा ही फिर कोरा कागज़ उसे मिला । बड़ी असमंजस की स्थिति है! यह कौन सा खेल चल रहा है। उसने सोचा कि जो पहले पत्र में लाया था तब मुझे ख्याल नहीं था कि यह एक कोरा कागज़ है। परंतु अपने सामने ही कवर खोलकर निवृत्तिनाथ और मुक्ताबाई को पढ़ते हुए देखा तो ख्याल आया कि उसमें लिखा तो कुछ भी नहीं था, तब भला इन लोगों ने क्या पढ़ा और किस तरह इतने प्रसन्न हुए! उससे रहा नहीं गया।

नम्रता के साथ उसने निवृत्तिनाथ को पूछा - 'महाराज , इस पत्र को लेकर जाऊं उससे पहले मेरे मन की छोटी सी जिज्ञासा का समाधान करेंगे क्या? आप दोनों ने मेरे ही सामने पत्र खोला, पढ़ा तो मुझे ख्याल आया कि उसमें कुछ लिखा तो था ही नहीं ,तो आपने उसमें आखिर पढ़ा क्या? पत्र को आप देख रहे थे तो आपके चेहरे का भाव देख मुझे लगा कि ज़रूर आप कुछ पढ़ रहे हैं लेकिन लिखा तो कुछ भी नहीं था उसमें! तो पढ़ा क्या?और आप अकेले ने ही नहीं परंतु मुक्ताबाई जी ने भी यह पत्र पढ़ा और वे भी प्रसन्न हुए! और अब यही कोरा कागज़ जवाब के रूप में मेरे साथ वापिस भेज रहे हैं तो मेरे मन की जिज्ञासा चरमसीमा तक पहुँच गई, इसीलिए मैंने आपसे इसका समाधान पूछा। 'निवृत्तिनाथ ने कहा कि एकनाथ ने संदेशा भेजा है कि परमात्मा को जानने के लिए अंतरतम को इस कोरे कागज़ जितना शुद्ध और खाली करना पड़ेगा। जब तक बाहर के संग्रहित ज्ञान, पंडिताई या अहंकार के भाव मौजूद हैं तब तक ईश्वर की अनुभूति संभव नहीं। अंतर जो दर्पण जैसा स्वच्छ और स्पष्ट बने तब ही ईश्वर का प्रतिबिंब उसमें अनुभव हो सकता है। यही उनके (एकनाथ) कहने का आशय है कि कुछेक बातें ऐसी हैं जो शब्दों द्वारा, कागज़ में लिखकर नहीं कही जा सकता, उसे कहने और समझने के लिए बाह्य जगत से व विकृतियों से शून्य होना पड़ेगा। आपको वैसे भी इस बात का संज्ञान होना चाहिए कि परमात्मा के अनुभव तो शब्दातीत हैं। शब्दों में वे आ ही नहीं सकते। हाँ, शब्दों द्वारा हम इतना इशारा तो कर ही सकते - शेष पेज 7 पर

मन रूपी साम्राज्य को बुद्धि रूपी सम्राट ही नियंत्रित करेगा

ओम शान्ति भवन क्या है? एयरपोर्ट। यहाँ बैठे सब बातें समेट के, समा के शान्तिधाम में चल रहे हैं। मधुबन में यह भासना आती है ना! साकार में मीठे-मीठे बाबा ने हिस्ट्री हॉल में बैठ बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाई हैं। फिर मेडिटेशन हॉल में अव्यक्त बापदादा की पधरामणी होते ही बाबा के डबल विदेशी बच्चे पैदा हुए। वैरायटी बाबा के बच्चों को देख जैसे अर्जुन कहता है मैंने अभी आपको पहचाना, आपके विराट स्वरूप को। साकार में तो क्या बताऊँ, पर अव्यक्त हो करके हम सबकी अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए कितना प्यार से पालना कर पढ़ाई पढ़ा रहे हैं।

साइलेंस माना कोई चिंतन नहीं, ऐसी स्थिति सदा रहे। बाबा के ही चिंतन में रहूँ, कोई बात मन चित्त में न हो, जो बाबा मेरे चिंतन में रहे क्योंकि कोई भी बात मन चित्त में होगी, मन में पहले होती है, चित्त में अंदर होती है। मन में मोटे रूप में होती है, चित्त में पुरानी बात होती है। वो निकल आती है तो चेहरे पर भी आ जाती है, शब्दों में भी आ जाती है। बड़ा सम्भालना है। साक्षी और साथी बन पार्ट प्ले करो। बाबा ने यह भी कहा जो भी बाबा के बच्चे हैं, बाबा को अच्छे लगते हैं क्योंकि कहता है मेरे तो बच्चे बन गये ना इसलिए बाबा यह कभी नहीं कहता है कि यह अच्छा नहीं है, पर बनो कैसा वो स्पष्ट सुनाता है। उसमें भी दो बातें बहुत खतरनाक हैं, जब मेरा बाबा कहा तो भूल से भी कोई देहधारी से लगाव न हो। किसी से प्रभावित हुआ या किसी के लिए घृणा रखी तो बाबा याद नहीं आयेगा। हिम्मते बच्चे मददे बाप वाला जो सौदा है वो कैन्सिल हो गया। यह बड़ी भूल है, जिसको बाबा कहते किसके साथ फैमिलीयरटी में बातचीत करना या किनारा करना। इसका बहुत ध्यान रखो क्योंकि बाबा चाहता है मेरे बच्चे राज्य पद पायें इसलिए राजयोग सिखाते हैं, राजाओं का राजा बनाते हैं।

आजकल राजाओं के पास कुछ रहा ही नहीं, आज के राज्य में राजाई को खत्म कर दिया। द्वापर के शुरुआत में जो राजायें थे वो दान-पुण्य करते, मंदिर बनाते, एक जन्म में भी राजाई ली थी पर बाबा हमको 21 जन्मों के लिए राजाई दे रहे हैं। मैं तो कहती 84 जन्म ही हम राजाई संस्कार में रही हूँ माना मन कर्मेन्द्रियों के इच्छा वश नहीं रही होंगी, अंतिम जन्म में भी नहीं रही होंगी। इस अंतिम जन्म में बाबा का बनने से पहले बचपन से ले करके सारी स्टोरी को इमर्ज करती हूँ, कभी मन व कर्मेन्द्रियों के वश कोई ऐसा कर्म नहीं किया। तो सभी कान खोलके सुनो अभी हरेक की पर्सनैलिटी में ऐसी रीयल्टी हो। कहा जाता है नियत साफ मुराद हासिल। नियत साफ है अर्थात् स्वार्थ वा स्वभाव वश नहीं हैं, तो ऐसे जो संकल्प करते हैं वो प्रैक्टिकली लाइफ के अंदर कोई संकल्प आया तो वो साकार हो जाता है। सिर्फ संकल्प निमित्त आयेगा, वह साकार हो ही जायेगा। अगर इसी तरीके से किसी को राज्य पद पाना है तो अपनी स्थिति ऐसी बनाओ। साथ रहना हो तो बाबा को साथी बनाकर सेवा में साक्षी हो रहना। गैरंटी है, अंत मते मुझे कोई भी बात का संकल्प नहीं आयेगा, यह मेरी चीज़ है, यह मेरे भाई बहन हैं। मेरी है ना, तो मैं कौन हूँ? इस शरीर में आत्मा हूँ परंतु बाबा कहता है तुम शरीर में आत्मा, तुमको कैसे रहना है जैसे मैंने तुमको चलाया है। एक बारी मैंने अव्यक्त बाबा को कहा बाबा अच्छा चला रहे हो, तो बाबा ने कहा चल रही हो तो मैं चला रहा हूँ। तो अटेन्शन भूल मत जाना। बाबा भी मुफ्त में मदद नहीं करता है, हमको मरना, झुकना, सीखना है। यह हमारे क्वीन मदर के शब्द सदा काम में आये हैं, मुझे मरना है। ऐसे नहीं सदा मैं ही मरूँ, हाँ मैं ही मरूँगी। तो जो बाबा ने सिखाया है वही करना है, इसमें धीरज रखने से कोई भी संकल्प नहीं आता है। सब शक्तियाँ बाबा से लेनी हो तो धीरज धर मनुआ... जल्दी उतावली में आ करके ऐसे नहीं करो। तो सभी सदा खुश रहो, आबाद रहो, न बिसरो न याद रहो। यह जो भी बातें सुनाई हैं वो बातें न बिसरो और जो न काम की बातें हैं वो न याद करो।

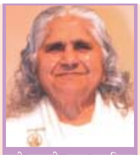

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मन में शक्तियों का स्टॉक होगा तो व्यर्थ संकल्प स्टॉप होगा

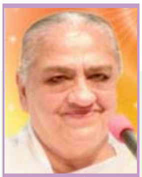

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा से हमारे सर्व सम्बन्ध हैं - यह अनुभव बहुत गहरा होना चाहिए। सखा चाहिए तो बाबा को सखा बना लो, कम्पैनियन की रीति से कम्पनी और कम्पैनियन बाबा को बना लो। ऐसे नहीं कि बाबा, बाबा ही है लेकिन बाबा सब कुछ है। कोई समय उदास हो जाते हैं, अकेले-अकेले महसूस करते हैं तो बाबा को अपने कम्पैनियन रूप में जीवन का साथी बना दो। वैसे साथी तो साथ में रहते हैं लेकिन बाबा हमारे जीवन का साथी है जिस रूप में बाबा को याद करेंगे, बाबा आपको साथ देने के लिए बन्धा हुआ है इसलिए अधिकार से बाबा को याद करो।

ऐसे नहीं योग लगा, नहीं लगा...अरे क्यों नहीं योग लगता, मेरा बाबा है, तो मेरा कभी भूलता है क्या! जैसे अपना शरीर व शरीर का नाम कभी भूलता है? आपके नाम से अन्य दूसरे किसी को बुलायेंगे तो भी आप ऐसे करेंगे ज़रूर। तो बाबा मेरा है, मैं बाबा की हूँ तो मेरे का अधिकार है और मन्सा भी तभी ठीक होगी। सेवा के लिए पहले हमारी मन्सा बहुत क्लीयर होनी चाहिए, और कुछ उसमें नहीं होना चाहिए। अगर कोई किचड़ा होगा तो ऐसों के साथ बाबा नहीं बैठ सकता है। बाबा की याद नहीं आ सकती है क्योंकि बाबा अति स्वच्छ है और अन्त के समय तो आपको पता ही है कि क्या हालतें होंगी। ऐसे वायुमण्डल में आप मन्सा सेवा करने के लिए अगर सोचते हो कि करना तो है ही, लेकिन पहले देखो कि मन और बुद्धि क्लीयर है? जैसे सेंटर में अगर सफाई नहीं होगी तो वह सेंटर गृहस्थी घर लगता है। तो जैसे सेंटर या स्थान जहाँ हम बैठते हैं उसकी सफाई ज़रूरी है, ऐसे अगर मन्सा सेवा करनी है तो पहले मन हमारा क्लीयर हो। चेक करो कि मन में और और बातें तो नहीं हैं? अगर और बातें नहीं हैं तो मन्सा सेवा कर सकते हैं। सेवाओं के समय मन्सा में सर्व-शक्तियों का स्टॉक इकट्ठा होना चाहिए। सर्व छोड़ो, कम से कम 8 शक्तियों का मेरे मन में स्टॉक हो। अगर स्टॉक ही नहीं होगा तो आप देंगे क्या? पहले एक-एक शक्ति को सामने लाओ - मेरे में सहनशक्ति है? समाने की शक्ति है? कितने परसेन्ट में है? समय पर यूज़ होती है? यह दो बातें चेक करो। यह अभ्यास अभी से शुरु करो कि कौन-सी शक्ति किस समय यूज़ करने का क्या अनुभव है? नहीं तो उस समय धोखा मिल सकता है और स्टॉक जमा करने के लिए सिर्फ स्टॉप करने की विधि को अपनाओ माना बिन्दी लगाने की विधि को अपनाओ। अभी लास्ट समय में प्रकृति और माया दोनों ही अपना बहुरूप धारण कर हमारे सामने आयेगी, तो उस समय अगर हम आत्मा पावरफुल नहीं होगी तो और आत्माओं का प्रभाव भी हमारे ऊपर पड़ सकता है। इसीलिए आत्मा बहुत पावरफुल चाहिए। इसके लिए अभ्यास करो कि एकदम स्टॉप। कईयों को किसी का रोना देख करके भी रोना आ जाता है, और अन्त समय में तो चिल्लायेंगे, खून की नदियाँ बही हुई होंगी फिर क्या करेंगे? अगर हमारे पास इतनी शक्ति नहीं है, तो चाहे माया का, चाहे प्रकृति की हलचल का, चाहे व्यक्तियों का कोई भी प्रभाव पड़ सकता है। तो कोई भी प्रभाव हमारे ऊपर नहीं पड़े इसके लिए हमारी शक्तिशाली स्थिति होनी चाहिए और मन पर पूरा कन्ट्रोल होना चाहिए। कुछ भी हो रहा है परन्तु हमें साक्षी दृष्टा बनकर, सीट पर बैठकर देखना है। यह बेहद का ड्रामा है, इसमें यह सब होना ही है और हमने ही कहा है यानि हमने प्रकृति को ऑर्डर दिया है। यदि ऑर्डर देने वाले ही हलचल में आ जावें तो प्रकृति बिचारी क्या करेगी! जैसे हद के ड्रामा को देखते समय कभी कन्फ्यूज़ नहीं होते, ऐसे ही हम साक्षीपन की सीट पर बैठ करके यह सब खेल देखते रहें, हलचल में नहीं आ जायें। हाय, हाय नहीं करें - वाह ड्रामा वाह!...तो इतनी स्थिति पहले पक्की है?

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर पहुँचने पर वहाँ समर्पित भाई-बहनों को बोर्ड रूम में सम्बोधित करते हुए कहा कि अब समय है, बाबा की जो हमारे ऊपर आश है उसे पूर्ण करने का और स्वयं को सम्पन्न बनाने का। बाबा ने हमें ये सुंदर समय दिया है जहाँ हम अपने उज्जवल भविष्य की नींव रख रहे हैं। हमारा भविष्य कैसा होगा ये हमें यहाँ से ही तय करना है। उस वक्त ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन तथा दादी रुक्मणि भी उपस्थित थे।

ढाई आखर प्रेम के...

''पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय,
ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।''

प्रेम मनुष्य के जीवन का एक शास्वत सत्य है जिसे वह कभी चाहकर भी नकार नहीं सकता। कहा जाता है प्रेम के ढाई अक्षर होते हैं लेकिन शब्द अधूरा होते हुए भी प्रेम सदैव पूरा होता है। इस अधूरे शब्द को अपने जीवन में महसूस कर मनुष्य का जीवन पूर्ण हो जाता है। प्रेम के बिना ये असार संसार नीरस है। प्रेम मनुष्य में जीवन का संचार करता है। ये वो शक्ति है जो मनुष्य में मनुष्यता लाती है, एक आत्मा को दूसरी आत्मा से तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़े रखती है। प्रेम एक ऐसी भावना है जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवन नीरस हो जाता है।

कितनी ही किताबें-ग्रन्थ, शास्त्र व्यक्ति पढ़ ले परंतु यदि उसमें प्रेम की भावना नहीं तो उसे ज्ञानी-पंडित या श्रेष्ठ आत्मा नहीं कहा जा सकता। यदि वह प्रेम के ढाई अक्षर पढ़ ले तो बड़े से बड़ा ज्ञानी भी उसके सम्मुख झुक जाता है। प्रेम एक अथाह सागर की भांति है जिसमें इसके सभी रूप समाये होते हैं। कभी यह माँ-बच्चे के प्रेम के रूप में पल्लवित होता है तो कहीं पति-पत्नी के प्रेम के समर्पण भाव में उजागर होता है। कभी यह भाई-बहन के प्यार को रक्षासूत्र में बांधता है तो कभी मित्रों के हृदय में अविरल धारा की भांति बहता है। भक्त और भगवान के बीच या आत्मा और परमात्मा के बीच भी प्रेम का ही संबंध होता है। प्रेम ही है जो परमात्मा को भी आत्मा के समीप खींच लाता है। वो प्रेम ही है जिसके कारण भगवान को भक्त के समक्ष आना पड़ता है। प्रेम वो शक्ति है जो पाषाण को भी पानी बना सकती है, रेगिस्तान में फूल खिला सकती है। कुछ समय पूर्व का इतिहास ही यदि हम देखें तो मीरा हो या राधा जिनको प्रेम दिवानी कहा जाता है, इनका प्रेम इतना असीम था कि वे स्वयं कृष्णमय हो गई थीं। उसके बाद भी हमें लैला-मजनू, सोनी-महिवाल, हीर-रांझा जैसे उदाहरण देखने को मिलते हैं जिन्होंने प्रेम में स्वयं को कुर्बान कर दिया। इन सभी का प्रेम नि:स्वार्थ एवं शुद्ध था। इनको एक-दूसरे से किसी प्रकार की कोई अपेक्षा नहीं थी। प्रेम तो एक एहसास है जो हमें एक-दूसरे से जोड़े रखता है। प्रेम खुदा की वो नेमत है जिसके समान दुनिया की कोई नेमत नहीं। प्रेम बिना कुछ कहे सब कुछ कह देता है। इसके लिए ही कहा गया है:

'होंठ सिले हैं मगर फिर भी बात होती है,
तुम वहाँ मैं यहाँ फिर भी मुलाकात होती है,
तेरे बिना ये ज़िन्दगी, ज़िन्दगी नहीं,
तू साथ है तो सारी कायनात साथ होती हैं।'

प्रेम परमात्मा द्वारा प्रदत्त एक ऐसा गुण है जिसके बिना जीवन संभव ही नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति का किसी न किसी से प्रेम अवश्य होता है, भले वो प्रेम स्वयं से ही क्यों न हो, किसी वस्तु से क्यों न हो पर होता अवश्य है। सत्य प्रेम सागर की तरह है,

प्रेम ही है जो परमात्मा को भी आत्मा के समीप खींच लाता है। वो प्रेम ही है जिसके कारण भगवान को भक्त के समक्ष आना पड़ता है। प्रेम वो शक्ति है जो पाषाण को भी पानी बना सकती है, रेगिस्तान में फूल खिला सकती है। प्रेम परमात्मा द्वारा प्रदत्त एक ऐसा गुण है जिसके बिना जीवन संभव ही नहीं है।

जिसके हृदय में सच्चा प्रेम है वहाँ कोई भी नकारात्मक विचार, गलत भावनाएं, झूठ, धोखा इत्यादि नहीं हो सकते। जहाँ इस प्रकार की भावनाएं अंश मात्र भी हैं वहाँ प्रेम में कुछ मिलावट अवश्य है।

''रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय
तोड़े से फिर ना जुटे, जुटे गांठ परि जाये।''

प्रेम के धागे को जहाँ एक ओर कमज़ोर कहा जाता है वहीं दूसरी ओर वह बेहद शक्तिशाली भी होता है। यदि हम सभी संबंधों को पूर्ण विश्वास एवं इमानदारी से निभाते हैं, अपने हृदय में शुभ-भावनाएं रखते हैं तो यह धागा और मजबूत होता जाता है, पर यदि हमारे संबंधों में झूठ, बेइमानी, धोखा, स्वार्थ इत्यादि का समावेश हो जाता है तो ये धागा कमज़ोर होता-होता टूटने की कगार पर आ जाता है। एक बार यदि यह धागा टूट गया तो आप कितना भी इसको जोड़ने की कोशिश कर लें जुड़ना मुश्किल हो जाएगा और यदि जुड़ भी गया तो उसमें गांठ अवश्य पड़ जाएगी। संबंधों की वो पहले वाली मिठास हम चाहकर भी कभी वापिस नहीं ला पायेंगे। हमें सदैव यह प्रयास करना चाहिए कि ये धागा दिनों-दिन और मजबूत होता रहे और इस प्रेम के धागे को मजबूत करने के लिए हमें परमपिता परमात्मा से अपना संबंध जोड़ना चाहिए क्योंकि हम जानते हैं कि परमात्मा प्रेम का सागर है। हम जितना-जितना उससे स्वयं को जोड़ते जायेंगे तो प्रेम हमारा भी नैचुरल संस्कार बन जायेगा। हम स्वयं भी प्रेममय हो जायेंगे और हमारे अंदर से प्रेम की अविरल धारा बहती हुई समस्त विश्व के लोगों तक पहुँचेगी।

आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेम का स्वरूप बदलकर सागर से तालाब जैसा हो गया है। प्रेम का दायरा इतना छोटा हो गया है कि लोग दूसरों के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति, धोखा, आकर्षण, वासना को ही प्यार समझने लगे हैं। प्रेम एक आकर्षण मात्र रह गया है। प्रेम के इस रहे हुए तालाब स्वरूप में इस प्रकार की गंदगी आने से इसमें सड़न पैदा होने लगी है। आज प्रत्येक संबंध में चाहे वो माँ-बाप-बच्चों का संबंध हो, पति-पत्नी का संबंध हो, भाई-बहन का संबंध हो, मित्रों का संबंध हो सबमें कहीं न कहीं सूक्ष्म रूप में स्वार्थ भावना ने अपना घर बना लिया है। तो आज ऐसे समय में आवश्यक है कि हम अपना संबंध उस प्रेम के सागर से जोड़ें और स्वयं को नि:स्वार्थ प्रेम से भरपूर करके सभी को इस प्रेम की अनुभूति करायें तथा इस तालाब में हमारा प्रेम कमल पुष्प समान पल्लवित होता रहे और पूरे संसार में खुशबू फैलाता रहे। **- ब्र.कु. शोभिका,शांतिवन**

मेघालय। दुर्गा पूजा के अवसर पर आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी समझाते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

रूरा। नवदुर्गा चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करने के बाद समूह चित्र में एस.डी.एम. राजीव पांडे, ब्र.कु.प्रीति, ब्र.कु.नीलम तथा अन्य।

सूरत-अडाजन। चैतन्य देवियों की झाँकी व 7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए स्टैन्डिंग कमेटी के चेयरमैन निरम शाह, वार्ड प्रमुख दीप विजय सेन, ब्र.कु. दक्षा व अन्य।

ग्वालियर। वाइस चांसलर ए.के. सिंह को कृषि मेले में शाश्वत योगिक खेती के बारे में बताते हुए ब्र.कु. चेतना। साथ हैं अन्य।

गया-ए.पी. कॉलोनी। दुर्गा पूजा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक प्रेम कुमार, कमिश्नर खंडेलवाल जी, डॉ. आर. कुमार, सी.आर.पी.एफ. कमाण्डेंट धीरज कुमार व ब्र.कु. सुनीता।

बागलकोट। राष्ट्रीय कार्यक्रम 'स्वच्छता अभियान' में भाग लेते हुए जगदगुरु जयबसावा मृत्युंजय स्वामी जी, घनश्याम भांडगे,फिल्म प्रोड्यूसर,वैश्नवी क्रियेशन, ब्र.कु. पदमा तथा अन्य।

आगरा। जगदम्बा इंटर कॉलेज के प्रिन्सीपल सी.पी. वर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विनीता तथा ब्र.कु. भावना।

अहमदाबाद-नवरंगपुरा। दिव्य गीत कॉन्टेस्ट के दौरान ब्र.कु. इशिता आये हुए सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए। साथ हैं दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. चन्द्रिका तथा अन्य।

मुम्बई-बोरीवली पश्चिम। एलायंस कंपनी के कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम 'हार्मोनियस रिलेशनशिप इन वर्किंग प्लेस' के पश्चात् मनीष पारीख,डायरेक्टर,एलायंस कंपनी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिंदु। साथ हैं ब्र.कु. श्रेया तथा अन्य।

छत्तरपुर-घुवारा(म.प्र.)। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में तहसीलदार विनीता जैन, नगरपालिका अध्यक्षा मंजू सिंह, ब्र.कु. नीतू, ब्र.कु. दीपा तथा अन्य।

भुज-कच्छ। विश्व हिन्दु परिषद द्वारा वेद कथा के आयोजन में परम पूज्य 108 शान्तानंद सरस्वती जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीना।

धमतरी। आंतरिक एवं बाह्य स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए सरोज चौरे,सहायक उप पुलिस निरीक्षक, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. आलोक जाधव, डॉ. एन.पी. गुप्ता,पूर्व अध्यक्ष,नगरपालिका परिषद, ब्र.कु. नंदनलाल दीवान,राईस मीलर तथा ब्र.कु. परमानंद वासानी,सचिव मेडिकल एसोसिएशन।

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

ब्र.कु. ललित शांतिवन

अखाद्य वस्तुएं और उनका शरीर पर प्रभाव

अपनी माँ का दूध अमृत .....दूसरे की माँ का दूध रोग कारक

11. हमारे शरीर को अधिक से अधिक कार्बोज शर्करा चाहिये जो हमें फलों में भरपूर सहज मिल जाता है। अनाज, दालें दुष्पाच्य कार्बोज हैं। रोग कारक हैं। दूसरे नम्बर पर थोड़ी वसा चाहिये जो हमें गिरियों से प्राप्त हो जाती है। सभी हरी पत्तियों में सर्वश्रेष्ठ सुपाच्य प्रोटीन भरपूर होता है।

12. उच्च प्रोटीन युक्त आहार खाने से शरीर का कैल्शियम कम हो जाता और अपने वास्तविक आहार फल-सब्जियाँ, गिरियाँ व अंकुरित खाने से कैल्शियम ही नहीं बल्कि किसी विटामिन या खनिज तत्व या प्रोटीन की भी कमी नहीं होती। दूध में कैल्शियम अत्यधिक होने के कारण शरीर उसका लाभ उठाने के बजाय सिर्फ रोगी हो जाता है।

13. डॉ. ग्राहम लिखते हैं "मैंने देखा है कि पेट दर्द वाले तथा अन्य रोगियों की तबीयत दूध छोड़ने के बाद पहले की तुलना में अधिक अच्छी रही है। वैसे भी कई रोगियों के लिए तो दूध बन्द करना ज़रूरी हो जाता है। पेट के दर्द से पीड़ित लगभग सभी रोगियों को दूध लेने से पेट में भारीपन लगता है और पेट फूलने की तकलीफ खड़ी होती है।" अर्थात् ऐसी सामान्य मान्यता है कि दूध एक पौष्टिक पेय है और सरलता से पचने के कारण रोगियों के लिए बहुत उपयोगी आहार है मात्र भ्रम ही सिद्ध हुई है। हमने देखा कि दूध रोगी के लिए कष्टदायक बनता है। एक उदाहरण देखिए - 140 बालकों, जिन्हें आँतों और गले की सूजन, कब्ज, सर्दी, पेटदर्द, उल्टी, खाँसी आदि पीड़ा थी उनपर एक प्रयोग किया गया। जब उनका दूध बन्द किया गया तब ये सारे लक्षण अदृश्य हो गए। पहले इन तकलीफों के कई उपचार किए गए परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ था।

14. लोग दूध इसलिये पीते हैं कि इससे उनके शरीर में वीर्य बल की वृद्धि होगी। परन्तु शरीर को अनावश्यक ही उसे शरीर से बाहर करने के लिए काम करना पड़ता है। इस तरह जीवनी शक्ति का दो-दो बार व्यर्थ ही व्यय होता है, एक बार तो उस गरिष्ठ भोजन को पचाने में और दूसरी बार फिर उसे निकालने में। दूध से बनी हुई इस अनावश्यक चिकनाई का बहिष्करण भी शरीर तभी तक कर सकता है जब तक पाचन शक्ति तीव्र रहती है, किन्तु जब कालान्तर में पाचन शक्ति निर्बल पड़ जाती है तो दूध से बनी अनावश्यक चिकनाई को शरीर नहीं निकाल पाता, तब वह बलगम के रूप में शरीर के अन्दर ही जमा होने लगती है और शरीर को फुलाकर बेकाम कर देती है।

येलाहांका के गोपालकृष्णा, उम्र-40 वर्ष, घुटने के दर्द एवं पाइल्स से पीड़ित थे जो स्वर्णिम आहार पद्धति से ठीक हो गये। तो आइये, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इस गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

अतीत को 'भूल' तब जाके निकलेगा शूल

प्रश्न: कैसे भुलाया जाए अपने पास्ट को?

उत्तर: ये समझने की ज़रूरत है कि परिस्थिति आई थी, मुझे नुकसान हुआ, मैं आगे बढ़ी लेकिन मैंने उस नुकसान को, उस दु:ख को दूर नहीं किया, तो वो मुझे दर्द में ही छोड़ जायेगी। अब हम कहते कि ये मुझे याद रखना है। आप कहेंगे कि इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। जितनी बार हम उस बात को याद करते, वो हुई पहले, लेकिन अब मैं जितनी बार, आप प्रैक्टिकल में भी देखेंगे हम बीती हुई बातों के बारे में सोचकर अभी भी रो सकते हैं। जबकि वो बात तो है ही नहीं, वो लोग भी नहीं हैं, वो सीन भी नहीं है, फिर भी मैं रो रही हूँ, दु:खी हो रही हूँ। इसका कारण यह है कि वो बात मन में है बाहर नहीं निकली है। पास्ट को हम जितनी बार रिपीट करते हैं तो हम पास्ट को अपना वर्तमान बना लेते हैं और यह वर्तमान फिर मेरे भविष्य पर प्रभाव डालता है। साधारणत: हम कहते हैं कि उस बात को याद रखोगे तो वो बात फिर से नहीं होगी। वास्तव में आप जितना याद रखोगे उतना वो बार-बार होता जायेगा। जब भी मैं आपसे मिलूंगी तो मैं यही कहूंगी कि ये मुझे अपमानित करती है, तो हर समय हमारे संबंध कैसे बनते जा रहे हैं, हम उनसे ज़्यादा से ज़्यादा दूर रहने की कोशिश करते हैं।

अगर हम सचमुच में चाहते हैं कि हमारे बीते हुए समय की पुनरावृत्ति ना हो तो हमें उसे भूलना होगा, उसे बार-बार दोहराना नहीं होगा। लेकिन पास्ट रिपीट न हो उसके लिए क्या करना पड़ेगा? पास्ट को भूल जायें तो गारंटी है कि पास्ट रिपीट नहीं होगा। क्योंकि जितनी बार वो मन में रिपीट होगा, उतनी गहरी छाप मन में पड़ती जाती है।

प्रश्न: वास्तव में मैं इंतज़ार कर रही होती हूँ कि ये कब होगा। हमारे संबंधों में कई बार जो झगड़े होते हैं, भाई-बहन के बीच में झगड़े होते हैं उसमें वही शब्द, वही दृश्य सामने आता है और हमें पता भी होता है कि इसके बाद क्या होगा?

उत्तर: क्योंकि उस टेप को हमने इतनी बार रिवाइंड कर लिया होता है कि जैसे ही वो बात सामने आती है वह चलनी शुरू हो जाती है। जैसे यह एक मूवी के समान है। अगर आपके पास मूवी की कोई डी.वी.डी है और आपने वो मूवी 8-10 बार देख ली है। अब 11वीं बार उस मूवी को चलाओ। उससे मिलता-जुलता एक सीन है, हमारे अंदर इतनी शक्ति है कि उस सीन को हम बार-बार क्रियेट करते हैं और फिर हम क्रियेट ही नहीं करते इतने सारे लोगों के साथ उसको डिस्कस भी करते हैं। तो हमने उस सीन को कितनी बार क्रियेट किया! हमारे अंदर वो शक्ति है कि हम उस दर्द वाले सीन को भी बार-बार क्रियेट करते हैं। और जितनी बार उसे क्रियेट करते हैं हम उसको अपना वर्तमान बना लेते हैं, और जो हमारा वर्तमान बनेगा उसी का प्रभाव हमारे फ्यूचर पर भी पड़ेगा। वास्तव में अगर हम देखें, पास्ट की जितनी बार हम पुनरावृत्ति करते हैं, उसमें थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन आता जाता है वो थॉट एग्जैक्ट नहीं आयेगा। अब मैं जितने लोगों के साथ बात करूंगी उस बारे में मेरी रुचि, मेरी भावना, उसमें जुटती जायेगी। जब हम हर बार उसको रिपीट करते हैं, तो यह मूल घटना, मूल बात से अलग होती जाती है। यदि हम इसको देखें तो हमें पता चलेगा कि अब पास्ट की कोई संकल्पना ही नहीं है। जो बीता, जब हम उसको दूसरी बार वर्णन करते हैं तो वह एग्जैक्ट नहीं होता है। वास्तव में यह नया वर्तमान बन जाता है। मैं अतीत के बारे में बात नहीं कर रही हूँ।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्न: वास्तव में हमारी नवीनता यहीं पर खत्म हो जाती है। लेकिन एक बात रह गयी कि अतीत को, दु:ख खत्म करने के लिए याद तो करना ही पड़ेगा। वो दु:ख वाली बात वहीं रहेगी या छुट जायेगी?

उत्तर: दु:ख खत्म होने के लिए अगर याद करेंगे तो ये वही बात हुई ना कि जितनी बार याद करेंगे उतनी बार वो बढ़ता जायेगा। हमने बहुत बार कहा है कि अतीत को भूल जाओ, क्योंकि यही एक मात्र रास्ता है। क्षमा करो और भूल जाओ। हम कहते हैं कि हमने क्षमा कर दिया लेकिन हम भूल नहीं पाते हैं। यह कोई समाधान नहीं है इससे तो परिस्थिति और ही जटिल हो जाती है, इसलिए हमें अतीत को भूलना ही पड़ेगा। अगर हम अतीत को ऐसे ही भूलने की कोशिश करते हैं तो उसे हम भूल नहीं पाते हैं।

मान लो कुछ घण्टें पहले हुई बात को भूल जाते हैं और दस साल पहले हुई बात को भूल नहीं पाते हैं। हम कौन-सी बात को भूल नहीं पाते हैं? जिस बात से दिल दु:खी हुआ हो। हमें उस बात को भूलने के लिए कोई मेहनत नहीं करनी है। हमें सिर्फ ये करना है कि जो दु:ख-दर्द क्रियेट हुआ है उसे हम दूर कर दें। जब दर्द दूर हो जायेगा तो वो बात याद ही नहीं रहेगी। और वो दर्द तब खत्म होगा जब मैं उसको अपने ऊपर लूंगी। उन्होंने जो किया सो किया, जो बोलना था सो बोला, मुझे क्या रेस्पॉन्ड करना था। जवाब देना तो फिर भी मेरे हाथ में है। अपने आपसे उस तरह से बात करके, अपने आत्मविश्वास को उन पर निर्भर न करके अपने हाथ में लेकर जब हम अपने आपको हील करते हैं तब हम अतीत को भूल जाते हैं। जब तक वो दूर नहीं होगा और आप सोचें कि मैं अतीत को भूल जाऊं, तो ये नहीं होगा। कुछ समय बाद फिर वो वापस आ जायेगा। -**क्रमश:**

अहंकार का करें शिकार.....

- ब्र.कु. जगदीश हसीजा।

उक्ति प्रसिद्ध है कि अहंकारी नर को एक दिन लज्जित होकर सिर नीचा अवश्य करना पड़ता है अथवा कि मनुष्य को जितना अधिक अभिमान होता है उसे अन्त में उतनी ही अधिक ऊँचाई से गिरने-जैसा दु:ख अनुभव करना पड़ता है। उस समय उसकी सारी अकड़बाजी चूर हो जाती है और उसे बड़ी वेदना होती है। अत: अहंकारी मनुष्य तो उस सूखे और लम्बे बाँस की तरह है जोकि जंगल के अन्य बांसों के साथ टकरा कर आग लग जाने से आखिर भस्मसात हो जाता है।

आज मनुष्य जिस धन का गर्व करता है कल वह धन उसका साथ छोड़ सकता है क्योंकि धन कोई एक-रस, स्थिर और अविनाशी चीज़ नहीं है बल्कि धन को चंचल माना गया है। आज मनुष्य को जिस तन-शक्ति या जन-शक्ति का अभिमान है, वह भी तो एक दिन छोड़ जाने वाली है। ऐसा तो मनुष्य को दूसरों की जीवन-गाथा से भी मालूम होता है और प्रत्यक्ष भी दिखाई पड़ता है। अत: जबकि संसार की ऐसी ही गति है तो फिर अभिमान किस बात का?

अभिमान सभी विकारों का मूल है

भगवान कहते हैं कि यह देह-अभिमान ही सभी पापों और विकारों का मूल है और इसलिए यही सभी तापों का और माया के शापों का भी मूल है। लोग तो पाँचों विकारों में से काम को सब से पहले और अहंकार को सबसे बाद में गिनते हैं परन्तु वास्तव में सबसे पहला विकार अहंकार ही है, क्योंकि इसी से ही दूसरे विकारों की भी उत्पत्ति होती है। देह का अभिमानी मनुष्य ही स्वयं को पुरुष के भान और दूसरे को स्त्री की दृष्टि से देखकर व्यक्तभाव को प्राप्त होता है और वासनाओं के वश होता है अर्थात् काम रूपी कटारी से दूसरे को काटता है। अभिमानी मनुष्य के अभिमान की भावना को ठेस लगने से ही उस में क्रोध पैदा होता है। पुनश्च, अपने अभिमान को, अपने पोज़ीशन और शान को बनाए रखने के लिए ही मनुष्य लोभ का और रिश्वत आदि का आसरा लेता है। फिर, जिन चीज़ों को वह अहंकार तथा लोभ के वश होकर इकट्ठा करता है, उनमें उसका मोह तो हो ही जाता है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि अहंकार अन्य सभी विकारों का बीज है। अत: परमपिता परमात्मा कहते हैं कि अब अभिमान को तथा देह-अहंकार को छोड़कर देही-अभिमानी बनो।

अंहकार का भविष्य

अब हम परमपिता परमात्मा द्वारा जान चुके हैं कि शीघ्र ही इस पुरानी, कलियुगी दुनिया का महापरिवर्तन होने वाला है और सतयुगी पावन दुनिया स्थापन हो रही है। यह बात हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट है, यह कोई कल्पना नहीं है। परमपिता शिव ने अब यह भी समझाया है कि इस संगम समय में जो जितना निर-अभिमानी और नम्र-चित्त बनेगा उसका जीवन उतना ही श्रेष्ठ बनेगा और वह आने वाली पावन तथा दैवी सृष्टि में उतना उच्च देव पद प्राप्त करेगा। फिर, नम्र-चित्त मनुष्य का प्रत्यक्ष फल हम इस जीवन में भी देख रहे हैं कि वह शान्त और प्रिय होता है और उसे यम का भय भी नहीं होता। अत: जबकि अहंकारी का परिणाम और निरहंकारी की प्रारब्ध दोनों हमारे सामने हैं और जबकि इस अहंकारी सृष्टि का विनाश होना ही है। इसलिए जैसे परमपिता परमात्मा निराकार और निरहंकारी हैं और इस कारण बहुत ही लोकप्रिय हैं, वैसे ही हमें भी अब निज ज्योति-बिन्दु स्वरूप में स्थित होना चाहिए क्योंकि इस पुरुषार्थ से ही हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अब हमें जीते-जी अपने अहंकार को मारना चाहिए तभी हमें जीवन-मुक्ति पद की तथा अत्यन्त सुख की प्राप्ति होगी। अहंकारी मनुष्य तो उस अति सुखमय देव-सृष्टि में जा ही नहीं सकता बल्कि उसे तो धर्मराजपुरी में दण्ड भोगना पड़ता है। तो जबकि अहंकारी तथा निरहंकारी दोनों का भविष्य स्पष्ट रूप से हमारे सामने है तो हमें चाहिए कि अब हम नम्र-चित्त बनें तथा देह-अभिमान को छोड़कर स्वयं को देही-निश्चय करें।

परमपिता परमात्मा शिव की शुभ सम्मति

परमपिता परमात्मा कहते हैं कि आज विश्व में अशान्ति की सारी समस्या अहंकार ही के कारण है। कोई स्वयं को सेठ-स्वामी माने बैठा है तो कोई धनी-दानी। कोई स्वयं को नेता मानकर अभिमान कर रहा है तो कोई अभिनेता। इस प्रकार सभी अहंकार के नशे में चूर हैं। उन्हें यह मालूम ही नहीं है कि सतयुग में दास-दासियाँ भी इनसे अधिक सुखी होते हैं, उनके पास भी सोने के महल होते हैं। उस दैवी मर्यादा वाली सृष्टि में न कोई किसी का अपमान करता है और न किसी को किसी चीज़ का अभिमान होता है। निर-अभिमानी बनने के कारण ही तो उनकी इतनी उच्च प्रारब्ध होती है। अत: जबकि हमारी उस उच्च स्थिति से हमें अभिमान ने ही गिराया है तो उस गिरी हुई स्थिति में प्राप्त तमोगुणी वस्तुओं का अभिमान करना तो निरी मूर्खता है। हमें तो मन में यह सोचना चाहिए कि आज सतयुग के स्वर्ण महल की भेट में हमारे कांटों के ताज वाला धनवान अथवा नेता पद है और वहाँ के फुल-प्रूफ विमान की बजाए जो कार है, वह सब बेकार हैं, क्योंकि इनका संचय करने के पीछे कोई-न-कोई विकार है और इनके साथ दु:ख लगा हुआ है। सतयुगी हीरे-तुल्य जीवन की भेंट में तो वर्तमान जीवन कौड़ी तुल्य है! अत: इसका अभिमान कैसा?

अत:परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि - ''हे वत्स, मैं थोड़े समय के लिए ही तो अब इस सृष्टि में आया हूँ। मैं अधिक समय तो यहाँ ठहरता भी नहीं हूँ क्योंकि शीघ्र ही सतयुगी पावन सृष्टि की स्थापना करके मुझे जाना है। अत: सारे कल्प की आयु की भेंट में मैं कह सकता हूँ कि मैं एक घड़ी भर के लिए ही आप मनुष्यात्माओं की इस सृष्टि में आया हूँ। अब छोटे-बड़े सभी के सिर पर काल खड़ा है क्योंकि सब मानो मरे ही पड़े हैं, अब इनके विनाश में कोई अधिक समय शेष नहीं है। अत: जबकि इस भंभोर को आग लगनी ही है तो उस समय आप कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकोगे। पुरुषार्थ का समय तो उससे पहले है अर्थात् यह दो घड़ियाँ ही हैं। अत: अब यह अभिमान छोड़ दो कि मैं नेता हूँ, सेठ हूँ, समझदार हूँ, आदि-आदि। अब इनकी ओर मन को केन्द्रित न करके मेरी ओर अटेन्शन दो! अब यह सब कुछ मेरे अर्पण करके आप ट्रस्टी अर्थात् निमित्त होकर इनसे कार्य लो। अब देह का भी अभिमान छोड़ दो और सर्वस्व सहित मेरे हो जाओ तो मेरा सब-कुछ आपका हो जायगा। बताओ क्या इतना सस्ता और लाभदायक सौदा भी स्वीकार नहीं है?''

मूल्यों की री-इंजीनियरिंग - पेज 1 का शेष

अपने उन पुरातन मूल्यों की आवश्यकता है। हमें अपने जीवन में बेहतर तरीके से इन गुणों एवं मूल्यों की री-इंजीनियरिंग करनी है। उन्होंने कहा कि ये ईश्वरीय विश्व विद्यालय जो शिक्षा दे रहा है, वो दुनिया के किसी भी विश्व विद्यालय में नहीं दी जाती।

ब्र.कु. रंजना जिन्होंने काफी समय एक इंजीनियर के रूप से भी कार्य किया, ने अपने अनुभव के आधार से बताया कि आज हम इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जो भी कार्य कर रहे हैं, उसमें भी हमें गुणवत्ता एवं श्रेष्ठ कार्य-प्रणाली की आवश्यकता है। जितना हम आंतरिक रूप से सशक्त होंगे उतनी ही कार्य में श्रेष्ठता आती जाती है। उन्होंने कहा कि आज सब कुछ करते हुए भी जीवन में प्रेम, सुख एवं शान्ति नहीं है। वास्तव में ये चीज़ें हमारे स्वयं के भीतर हैं, लेकिन हम इनको बाहर व्यक्तियों एवं वस्तुओं में खोजते हैं, जोकि स्वयं ही परिवर्तनशील हैं।

उन्होंने आगे कहा कि हमें स्वयं को महसूस करने की आवश्यकता है, हम कोई शरीर नहीं हैं, शरीर तो प्रकृति से बना हुआ है। हम एक ऊर्जा हैं, जो दिखाई नहीं देती, जिसे सिर्फ महसूस कर सकते हैं। इसी ऊर्जा को हम आत्मा कहते हैं। आज हमारी खुशी दूसरों पर आधारित है, हमारा रिमोट कंट्रोल दूसरे के हाथों में है, अगर सब ठीक है तो मैं ठीक हूँ, लेकिन आध्यात्मिकता हमें सिखाती है कि मैं ठीक हूँ तो सब ठीक हो जायेगा। आज हम सभी को शरीरों के आधार से देखते हैं जिससे ही धर्मभेद, भाषाभेद एवं लिंगभेद पैदा होता है, अगर हम सभी को एक आध्यात्मिक चेतना अथवा आत्मा के रूप में ही देखेंगे तो सबके लिए प्रेम, शान्ति एवं सद्भावना ही उत्पन्न होगी। कार्यक्रम में विभिन्न कम्पनीज़ से लगभग 150 इंजीनियर्स एवं एग्ज़ीक्युटिव्स ने भाग लिया।

दिल्ली-मालवीय नगर। सतीश उपाध्याय,भाजपा अध्यक्ष दिल्ली को ओमशान्ति मीडिया भेंट करने के बाद मीडिया की गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. नीरू व ब्र.कु. लक्ष्मण।

नई दिल्ली। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय'' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाजपा नेता लाल कृष्ण आडवाणी, ब्र.कु. बृजमोहन, महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु. शिवानी तथा अन्य।

चण्डीगढ़। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में मंचासीन हैं पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट के न्यायाधीश अरुण पल्ली, ब्र.कु. अचल, ब्र.कु. अमीरचंद, सांसद किरण खेर तथा ब्र.कु. राम प्रकाश,न्यू यॉर्क।

चंद्रपुर-महा.। ऑर्डेन्स फैक्ट्री के ओ.एस.एम. को ईश्वरीय सेवाओं के बारे में बताने के बाद समूह चित्र में ब्र कु.दीपक तथा अन्य।

धमतरी। अभियंता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विचार संगोष्ठी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सरिता,सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. प्राची, एच.आर. कुटारे,प्रमुख अभियंता जल संसाधन विभाग,रायपुर, के.एल. वाही,पूर्व प्राध्यापक तथा अन्य।

सुन्नी-शिमला। दशहरा मेला का अवलोकन करने के पश्चात् मुख्य मंत्री राजा वीरभद्र सिंह, ब्र.कु. शकुंतला, ब्र.कु.रवादास तथा अन्य।

अफ्रीका-नाइजीरिया। महिलाओं के लिए 'हार्मनी इन रिलेशनशिप' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. साधना,दिल्ली किंग्सवे कैम्प।

राजनंदगांव। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.पुष्पा तथा शहर के गणमान्य लोग ।

देवगढ़ मदारिया-राज.। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए एस.एच.ओ. करण सिंह, राज. प्रदेश महिला कांग्रेस की सचिव शीला पोकरणे, ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. राधा।

मुम्बई-बोरीवली। 'सम्बन्धों में सुमधुरता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं अनिरुद्ध पाण्डेय,फाउण्डर एंड ट्रस्टी, डॉ. हृदयनारायण मिश्रा,अध्यक्ष,चेरिटेबल ट्रस्ट, डॉ. राधेश्याम तिवारी,अध्यक्ष,भारतीय सदविचार मंच, ब्र.कु. दिव्यप्रभा, सुभाष उपाध्याय,चेयरमैन,गौरीशंकर ग्राम सेवा मंडल, राधेश्याम सिंह,रिटायर्ड प्रिन्सीपल तथा सुरेश चौबे,टीचर।

अमरावती-महा.। व्यसनमुक्ति अभियान के अंतर्गत विधायक शिवजीराव मोघे,समाजकल्याण मंत्री ब्र.कु. सीता को अवार्ड प्रदान करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. संगम, ब्र.कु. बाबासाहेब शिरभाते व अन्य।

छिवरा-मऊ(उ.प्र.)। विधायक अरविन्द यादव को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. शिवानी।

बिलासपुर-शुभम विहार। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के बाद महिला आयोग की सदस्या हर्षिता पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता। साथ हैं वर्तमान कलेक्टर के पिता कोमल सिंह परदेशी तथा अन्य।

योग का आधार - 'स्व-चिन्तन' एवं 'श्रेष्ठ चिन्तन'

योग एक विज्ञान है, जैसे विज्ञान प्रकृति के रहस्यों को उजागर करने का अन्वेषण करता है, ठीक वैसे ही योग भी आध्यात्मिक सत्ता आत्मा और परमात्मा के सूक्ष्म स्वरूप तक पहुँचकर मन और बुद्धि की शक्ति द्वारा चेतना को उच्च स्तर तक ले जाता है, जिससे कि विश्व में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आता है। योग मन के सकारात्मक चिन्तन के द्वारा एक ऐसी ऊर्जा उत्पन्न करता है, जिससे शरीर की अनेक बीमारियाँ भी ठीक हो जाती हैं।

मन का जब परमात्मा के साथ गहरा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, तो आत्मा अपने मूल गुणों को शरीर के माध्यम से प्रतिबिम्बित करने लगती है। उसकी संकल्प शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि संकल्प करने मात्र से भी कई चीज़े ठीक होने लगती हैं। अगर आज हम अपने मन और बुद्धि की एकाग्रता के द्वारा चेतना के उस गहरे स्तर तक पहुँच जाएं तो हमारे जीवन में मूल परिवर्तन तो आता ही है, लेकिन जो हमारे सम्पर्क में भी आते हैं, उनको भी हमारी ऊर्जा का प्रवाह शान्ति, प्रेम और आनंद की एक गहरी अनुभूति कराता है। मनुष्य अपने जीवन का निर्माता स्वयं ही है, पहला निर्माण हम अपने संकल्पों से ही करते हैं। जैसा हम सोचते हैं, वैसा बन जाते हैं। जितना हम दूसरों की नकारात्मकता का चिन्तन करते हैं, उतना हमारी ऊर्जा घटती चली जाती है एवं हमारे मन में अनियंत्रित संकल्पों का प्रवाह शुरु हो जाता है जो हमें एकाग्र नही होने देता। इस सन्दर्भ में एक कहानी है - एक व्यक्ति जो कि धन से तो बहुत सम्पन्न था, परन्तु उसके जीवन में सच्ची शान्ति नहीं थी। एक बार उसने सोचा क्यों न कोई गुरू करके उनसे दीक्षा ली जाए। इसलिए वो घर से निकल गया और एक सन्यासी के पास पहुँचा, सन्यासी ने उसे स्वीकार कर लिया।

अब वह व्यक्ति रोज़ सन्यासी की आज्ञा के अनुसार सेवा करने लगा, जो भी आश्रम में आता वो सबकी बड़े सम्मान व आदर से सेवा करता। धीरे-धीरे वह आश्रम में ही रहने लगा और अपने गुरू का सबसे आज्ञाकारी शिष्य बन गया। काफी समय बाद एक दिन अचानक उसके मन में आया कि क्यों न कोई ऐसी सिद्धि प्राप्त करूँ जिससे मैं हर एक के मन की बात जान सकूँ। इस बारे में वो गुरूजी से मिला और कहने लगा कोई उपाय बताइए। गुरूजी ने कहा कि मैं तुमको एक छड़ी देता हूँ, जिसके भी मन को आप चाहो इसमें उतार सकते हो। छड़ी में जो भाग काले रंग का होगा वो मन की अशुद्धता एवं जो भाग सफेद होगा वो शुद्धता का प्रतीक होगा।

अब उस व्यक्ति ने आश्रम में आने वाले सभी श्रद्धालुओं पर ये प्रयोग करना शुरू कर दिया। छड़ी में सबके ही मन का एक बड़ा भाग काले रंग का नज़र आता था। इसलिए उसकी अब आने वाले श्रद्धालुओं के प्रति आस्था कम होने लगी। अब उसके मन में अनायास ही आया कि क्यों न गुरूजी के मन के बारे में भी जान लूँ, इसलिए एक दिन उसने गुरूजी के मन को भी छड़ी में उतारा, उसने पाया कि गुरूजी के मन का भी थोड़ा भाग काला

नज़र आ रहा है। अत: गुरूजी के प्रति भी उसके मन से आदर और सत्कार समाप्त होने लगा और अब उसका यही चिन्तन चलने लगा था कि यहाँ तो किसी का मन भी पवित्र नहीं है, गुरूजी का मन भी अभी अपवित्र है और वो अब उदास रहने लगा। एक दिन जब गुरूजी को लगा कि इसमें अब वो पहले जैसा सेवा भाव नहीं रहा, क्या कारण है? इसलिए उन्होंने उसे अपने पास बुलाया। गुरूजी ने पूछा, आप आजकल इतने निराश रहने लगे और सेवा भी ठीक से नहीं करते हो। उसने कहा, गुरूजी जो श्रद्धालु आपके पास इतने समय से आ रहे हैं, इन सबके मन में तो अभी भी बहुत अपवित्रता है। आपका मन भी अभी पूरी तरह शुद्ध नहीं हुआ है। यही सोच-सोचकर मैं परेशान रहने लगा कि यहाँ पर सब ऐसे ही हैं।

गुरूजी ने कहा आपने अपने मन को भी देखा, वह व्यक्ति बोला नहीं, तो अपने मन को भी इस छड़ी में उतारो। उसने अपने मन को उतारा तो देखा कि उसका तो सारा ही मन काला है, थोड़ा सा भाग हल्का-सा सफेद है। अब गुरूजी ने कहा कि यहाँ पर आने वाले सभी पुरूषार्थ कर रहे हैं, हरेक अपने मन को पवित्र बनाने में लगे हुए हैं, आपने उनके मन के पवित्र भाग को नहीं देखा। मेरे मन का भी काफी बड़ा हिस्सा पवित्र हो चुका है, थोड़ा सा ही बचा है जिसको मैं योग-तपस्या से पावन करने में लगा हूँ। लेकिन आपके मन का जो थोड़ा सा भाग धीरे-धीरे शुद्ध होता जा रहा था, वो भी अशुद्ध होने लगा है, क्योंकि आपने सभी के अन्दर नकारात्मकता देखनी शुरू कर दी है। इसलिए आज के बाद आप स्वयं के बारे में सोचो दूसरों की बुराइयों के बारे में नहीं। देखनी हैं तो दूसरों की अच्छाइयाँ ही देखो। हरेक की अपनी अलग-अलग यात्रा अथवा पड़ाव है। हमें स्वयं पर ध्यान देना है, तभी हम जीवन में मुक्त रह सकते हैं, अत: सही अर्थों में योगी वही है, जो स्वयं को देखता है, स्व-चिन्तन करता है। **- ब्र.कु. मदन मोहन,ओ.आर.सी. गुड़गांव।**

फुजराह-यू.ए.ई.। ब्र.कु.हेमलता आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा करते हुए ।

पंढ़रपुर-महा.। ''विराट दर्शन दिव्य कला दालन'' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. सोमप्रभा, विधायक सुधाकर पंत परिचारक, ब्र.कु. प्रताप तथा अन्य।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान- मैं दिव्य बुद्धि के वरदान से सम्पन्न आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच - ''बापदादा हर ब्राह्मण बच्चे को जन्म लेते ही विशेष दिव्य जन्मदिन की दिव्य सौगात 'दिव्य बुद्धि' देते हैं। दिव्य बुद्धि ही हर बच्चे को दिव्य ज्ञान, दिव्य याद, दिव्य धारणा स्वरूप बनाती है। दिव्य बुद्धि ही धारणा करने की विशेष गिफ्ट है। दिव्य बुद्धि में अर्थात् सतोप्रधान गोल्डन बुद्धि में ज़रा भी रजो तमो का प्रभाव पड़ता है तो धारणा स्वरूप के बजाए माया के प्रभाव में आ जाते हैं। सहज गिफ्ट के रूप में प्राप्त हुई दिव्य बुद्धि कमज़ोर होने के कारण मेहनत अनुभव करते हैं। जब भी मुश्किल वा मेहनत का अनुभव करते हो तो अवश्य दिव्य बुद्धि किसी माया के रूप से प्रभावित है। दिव्य बुद्धि वाले सेकण्ड में बापदादा की श्रीमत धारण कर सदा समर्थ, सदा अचल, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति का अनुभव करते हैं। श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ बनाने वाली मत। वह कभी मुश्किल अनुभव नहीं कर सकते। श्रीमत सदा सहज उड़ाने वाली मत है लेकिन धारण करने की दिव्य बुद्धि ज़रूर चाहिए। तो चेक करो कि अपने जन्म की सौगात सदा साथ है?''

सावधानी - ईश्वरीय दिव्य बुद्धि की गिफ्ट सदा छत्रछाया है लेकिन अगर माया अपनी छाया डाल देती है तो छत्र उड़ जाता है केवल छाया रह जाती है।

योगाभ्यास - दिव्य बुद्धि एक अलौकिक विमान है जिससे परमधाम व सूक्ष्म वतन की सैर सहज की जा सकती है...विशेष अमृतवेले एवं नुमाशाम के योग में दिव्य बुद्धि की गिफ्ट चेक करें कि वह साथ है? दिन भर आत्म-चिन्तन कर चेक करें कि उस पर माया का प्रभाव तो नहीं पड़ रहा है?

मनन-चिन्तन - वरदानों को साकार रूप में लाने के लिए क्या करें? दिव्य बुद्धि द्वारा क्या-क्या महान कार्य किए जा सकते हैं?

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - दिव्य बुद्धि पुरुषार्थी जीवन में सफलता प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। बुद्धि की दिव्यता जितनी ज़्यादा उतना ही बापदादा व ब्राह्मण परिवार के स्नेह के पात्र बन सकते हैं। अत: ध्यान रखें कि कहीं इस गिफ्ट पर माया का प्रभाव न पड़े।

स्वमान - मैं रूद्र ज्ञान यज्ञ का सच्चा सेवाधारी हूँ।

शिवभगवानुवाच - ''सेवाधारी सेवा करने से स्वयं भी शक्तिशाली बनते हैं और दूसरों में भी शक्ति भरने के निमित्त बनते हैं। सच्ची रुहानी सेवा सदा स्व उन्नति और औरों की उन्नति के निमित्त बनाती है। दूसरे की सेवा करने से पहले अपनी सेवा करनी होगी। सेवा से डबल फायदा होता है अपने को भी और दूसरों को भी। सेवा में बिज़ी रहना अर्थात् सहज मायाजीत बनना। सेवाधारी बनना अर्थात् सहज विजयी बनना। सेवाधारी माला में सहज आ सकते हैं क्योंकि सहज विजयी हैं। तो विजयी विजय माला में आयेंगे। सेवाधारी का अर्थ है ताजा मेवा खाने वाले। ताजा फल खाने वाले बहुत हेल्दी होंगे। कितना भी कोई उलझन में हो - सेवा खुशी में नचाने वाली है। कितना भी कोई बीमार हो सेवा तन्दरूस्त करने वाली है। सभी सेवाधारी अर्थात् सदा सेवा के निमित्त बनी हुई आत्माएं। सदा अपने को निमित्त समझ सेवा में आगे बढ़ते रहो। मैं सेवाधारी हूँ, यह मैं-पन तो नहीं आता है ना। बाप करावनहार है, मैं निमित्त हूँ। कराने वाला करा रहा है। चलाने वाला चला रहा है - इस श्रेष्ठ भावना से सदा न्यारे और प्यारे रहेंगे। अगर यह भान आया कि मैं करने वाला हूँ तो न्यारे और प्यारे नहीं। तो सदा न्यारे और सदा प्यारे बनने का सहज साधन है करावनहार करा रहा है, इस स्मृति में रहना। इससे सफलता भी ज़्यादा और सेवा भी सहज। मेहनत नहीं लगती। कभी मैं-पन के चक्र में नहीं आते।''

योगाभ्यास - अमृतवेले आँख खुलते ही स्वयं को परमधाम में महाज्योति के सम्मुख अनुभव करें...शिव बाबा शक्तियों से सुसज्जित कर रहे हैं...वहाँ से उतरकर फरिश्तों की दुनिया में आ जाएं...सूक्ष्म वतन फरिश्तों की दुनिया...वहाँ सम्पूर्ण ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा कम्बाइण्ड मुझे शक्तियों व गुणों से चार्ज कर रहे हैं...उसके पश्चात् स्वयं को सशक्त कर साकार लोक में अवतरित ईश्वरीय सेवाधारी के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाने के लिए तैयार हो जाएं...।

मनन-चिन्तन - सच्चे सेवाधारी की निशानियाँ व गुण क्या होंगे? सच्चे सेवाधारी को किन धारणाओं पर अधिक ध्यान रखना चाहिए?

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - ब्रह्मा बाबा ने अंत तक स्वयं को सेवाधारी समझा...हमेशा निमित्त, निर्माण, निरहंकारी का स्वरूप प्रत्यक्ष किया। उन्होंने कभी स्वयं को इंचार्ज या मालिक नहीं समझा...सदा शिव बाबा को ही करावनहार व स्वयं को करनहार समझा...।

कोरे कागज़ सा मन ... पेज 2 का शेष...

हैं। ग्रंथों के ग्रंथ भर दिए जाएं तो भी शब्दों में परमात्मा का अनुभव उतार नहीं सकते। उनके लिए तो कागज़ जैसा कोरा अंतर-मन रूपी आकाश में उतरना पड़े। अपने अंतर में उधार के ज्ञान का पार नहीं है। थोड़ा-बहुत कहाँ से भी पढ़ा और दिमाग में थोड़ा-बहुत आध्यात्मिक शब्द भर दिया और मान लिया कि हम बहुत बड़े ज्ञानी हो गये। एकनाथ का कहना है कि शब्दों का तो चाहे कितना भी संग्रह हो, अपने पास तो ये व्यर्थ हैं। अंदर जब तक नि:शब्द और शून्य न बनें तब तक परमात्मा के अनहद-नाद को अनुभव नहीं कर सकते। अंदर की अकुलाहट जब शांत हो तब ही यह संगीत सुन सकते हैं। अपने मन में और अंतर में राग-द्वेष, काम-क्रोध,मेरा-तेरा, अहंकार, वासनाओं का पार नहीं है। यह सब जिस घड़ी शांत होता है और खाली होता है, उसी घड़ी यह शून्य हुए कोरे (निर्दोष) अंतर में परमात्मा का अनुभव उतरता है। इस कोरे पत्र द्वारा संत एकनाथ ने हमें ऐसा ही संदेश भेजा है और इसलिए ही हम अनुग्रहित और आनंदित हैं।

उन्होंने जो कोरा कागज़ भेजा यह तो समझ में आता है, लेकिन जवाब में आपने वैसा ही कोरा पत्र वापिस भेजा उसका क्या अर्थ?

इसका अर्थ इतना ही है कि जिस ऊंचाई से उन्होंने (एकनाथ) बात की है उसे हम समझ गये हैं। जो बात शब्दों में कहकर समझा नहीं सकते उनका जवाब भी नि:शब्द होकर दिया जा सकता है। इसीलिए ही जवाब के रूप में हम भी कोरा कागज़ पत्र भेज रहे हैं। इसे संत एकनाथ ज़रूर पढ़ सकेंगे।

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब।
पल में परलय होयगी,
बहुरि करोगे कब।।

जबलपुर-नेपियर टाउन। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित गीता शरत तिवारी, उपाध्यक्ष महिला कांग्रेस,म.प्र., ब्र.कु. भावना तथा अन्य।

तपा-मण्डी(पंजाब)। मालवा नर्सिंग कॉलेज मैहलकला में 'तनाव से तन्दुरुस्ती' विषयक कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. लेखराम, विद्यार्थी तथा कॉलेज स्टाफ।

शांतिवन। स्पार्क कॉन्फ्रेन्स का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, स्पार्क विंग के अध्यक्ष ब्र.कु. रमेश शाह, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी तथा अन्य।

डिबरुगढ़। गीतापाठशाला का उद्घाटन करते हुए ऐरोड्रॉम मैनेजर किशोर शर्मा, श्रीमती शर्मा, ब्र.कु. बिनीता, ब्र.कु. बिधान तथा अन्य।

गाज़ियाबाद। साहिबाबाद रोडवेज़ डिपो वर्कशॉप में ''तनाव मुक्ति तथा स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के बाद पल्लव बोस,क्षेत्रीय प्रबंधक रोडवेज़ को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. राजेश बहन। साथ हैं ब्र.कु. संजय,माउण्ट आबू तथा अन्य।

कोचीन। प्रवासी मलयाली एकता दिवस पर ग्लोबल कॉन्फेडरेशन ऑफ प्रवासी मलयालीज़ की ओर से पी.सी. जॉर्ज,चीफ विप,केरला सरकार द्वारा राष्ट्र सेविका अवार्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु. राधा। साथ हैं मंच पर उपस्थित गणमान्य व्यक्ति।

सहारनपुर। शाकुम्भरी देवी मेले में नवरात्रि के अवसर पर प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में पूर्व विधायक रविन्द्र मोल्हू, पूर्व विधायक मजारा जी, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य।

गया-करीमगंज। 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य शिविर' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. जमिला,नेचरोपैथिस्ट,माउण्ट आबू। साथ हैं पार्षद निहाल अहमद, एडवोकेट इज़ाकत हुसैन तथा ब्र.कु. सुनीता।

जयपुर-राजा पार्क। 'विश्व शान्ति मेला' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. पुष्पा,दिल्ली, पार्षद लेखराज जेसवानी, डी.आई.जी. देवेन्द्र सिंह, ब्र.कु. अरुण व अन्य।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए शरद जैन,स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री,म.प्र., ब्र.कु. वमिला तथा अन्य।

जिन्द। 'अलविदा शुगर' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डॉ. श्रीमंत साहू, प्रधान वी.के. गुप्ता, सचिव सुभाष ठुकराल, डॉ. के.एस. गोयल, प्रिन्सीपल अल्का गुप्ता, ब्र.कु. विजय बहन,ग्रामीण प्रभाग संयोजिका, ब्र.कु. विजय तथा अन्य।

कलोल-गुज.। 'मेरा भारत स्वच्छ भारत' कार्यक्रम के अंतर्गत स्थानीय सेवाकेन्द्र की राजयोग शिक्षिका तथा ब्र.कु. भाई-बहनें।

मुम्बई-मलाड। बॉम्बे कैथोलिक सभा की ओर से आयोजित सामुदायिक कार्यक्रम में हार्मोनियस रिलेशनशिप विषय पर बच्चों को समझाते हुए ब्र.कु. नीरजा।

राँची। चैतन्य दुर्गा की झाँकी का उद्घाटन करते हुए अशोक कुमार सिन्हा,अतिरिक्त महानिदेशक,पुलिस रेल, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।

स्वधर्म ही 'धर्म' का पहला ककहरा

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

आत्मा में निहित गुण जो हमारे जीवन में सुख और शांति की अनुभूति कराते हैं, साथ ही जहाँ ये गुण हैं वहीं आत्मशक्ति का अनुभव होता है क्योंकि ये छ: गुण नहीं बल्कि छ: शक्तियां हैं। ज्ञान की शक्ति, पवित्रता की शक्ति, प्रेम की शक्ति, शांति की शक्ति ये सब शक्तियां हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यही आत्मा का स्वधर्म है। हर चीज़ का अपना गुणधर्म होता है। पानी का गुणधर्म है - शीतलता, अग्नि का गुणधर्म है - गर्मी, पानी को कितना भी उबालो फिर उसे छोड़ दो तो वह अपने शीतल स्वरूप को धारण कर लेता है। भावार्थ यह है कि जैसे हर चीज़ का अपना गुणधर्म है वैसे ही आत्मा का भी अपना गुणधर्म है - ज्ञान, पवित्रता, प्रेम, शांति, सुख, आनंद और शक्ति। यही सात गुण निरंतर हम ईश्वर से मांगते रहते हैं। अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से कि हे प्रभु! हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले चलो, हे प्रभु! मुझ आत्मा का शुद्धिकरण करो, हे प्रभु! तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूँद के प्यासे हैं हम, हे प्रभु! शान्ति दो, हे प्रभु! सुख दो, हे प्रभु! खुशी दो मेरे जीवन में, हे प्रभु! शक्ति दो, निर्बल को बल दो शक्ति दो। यही सात गुण ईश्वर से हर इंसान माँगता रहता है। चाहे वह किसी भी धर्म का हो, किसी भी जाति का हो, किसी भी देश का हो, यही सात गुण तो माँगते रहते हैं। सभी धर्म से ऊपर अध्यात्म है। अध्यात्म अर्थात् जो आत्मा से संबंधित हो। अध्यात्म हमें इन्हीं सात गुणों को प्राप्त करने की विधि बताता है कि कैसे इन सात गुणों से अपने जीवन को भरें और आत्म उन्नति को प्राप्त करें। दूसरे शब्द में कहें कि यही आत्मा की बैट्री है। लेकिन आज के युग में ये बैट्री डिस्चार्ज हो गयी है। इन सात गुणों में से एक भी गुण सम्पूर्ण रूप में नहीं रहा। बैट्री की शक्ति बहुत कम रह गई है। ऐसी जब हालत हो जाती है तब गीता ज्ञान की आवश्यकता होती है। जहाँ व्यक्ति को भगवान यही प्रेरणा देते हैं कि 'स्वधर्म' को जागृत करो, भीतर जाओ शांति, सुख, प्रेम और आनंद की अनुभूति करो। ये बाहर नहीं मिलेगा भीतर जाओ भीतर जाकर उसको उजागर करो। उस शक्ति को बाहर लाओ। जीवन के हर संघर्ष में विजयी हो। जिस आत्मा के पास ये सतों गुणों की शक्ति हो, वह जीवन के संघर्ष में कभी भी हार नहीं सकता है। लेकिन जब ये सातों गुण सुषुप्त हो जाते हैं, उसको उजागर करने की विधि हम नहीं जानते हैं तब जीवन के हर संघर्ष में हार का अनुभव करने लगते हैं। इसलिए भगवान ने अर्जुन को कहा इनको तुम जागृत करो और उसी के आधार पर युद्ध करो अर्थात् स्वधर्म के संस्कार को जागृत करो लेकिन आज मनुष्य धीरे-धीरे अपने स्वधर्म से दूर हो गया है और परधर्म के अधीन हो गया है। स्वधर्म से परधर्म की अधीनता में आ गया है अर्थात् ज्ञान से विपरीत अहंकार के वश हो गया है। यह अहंकार परधर्म है। शुद्धि के बजाए मन में अपवित्रता आ गयी है। ये अपवित्रता परधर्म है। प्रेम के बदले नफरत आ गयी है। ये नफरत ही परधर्म है। शांति के बदले, जीवन में क्रोध आ गया है। ये क्रोध परधर्म है। जब इस परधर्म के अधीन हो गये तब व्यक्ति कभी भी रिलैक्स अनुभव नहीं करता है। सात गुणों के बजाय मनुष्य के जीवन में सात अवगुण आ गए हैं वे हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष। इन सात अवगुणों के वह परवश हो गया है। तभी कहा गया है कि हे अर्जुन! स्वधर्म सुख का आधार है और परधर्म दु:ख का कारण है। तुम ये परधर्म को 'तजो' इसको समाप्त करो और वास्तविक जीवन को भी इस स्वधर्म के आधार पर जीना सीखो। -क्रमश:

अच्छाइयाँ अपनाकर कमियाँ दूर करें

ऐसा कहा जाता है कि सांप का विष तो काटने से चढ़ता है, लेकिन भोग-विलास और विषयों का विष केवल देखने से ही चढ़ जाता है। अगर विष केवल देखने से चढ़ता है तो विशेषता भी ऐसी ही होती है। जैसे बुराई संगत से प्रवेश कर जाती है, ऐसे ही अच्छाई भी मेलजोल से आपमें घुलमिल जाती है। इसलिए प्रयास करें कि हम अधिकांश मौकों पर दूसरों की विशेषताओं को अपने भीतर उतारें। पूर्ण कोई भी नहीं होता। अध्ययन करते रहें कि हमारे भीतर कौन-सी कमज़ोरियां हैं। कुछ कुदरती होती हैं तो कुछ कमज़ोरियां हम खुद ओढ़ लेते हैं। परमात्मा ने दोनों का निदान भी दिया है। आप अपनी कमी को साथियों की खूबियों से पूरा कर सकते हैं। इस भरपाई के लिए हमेशा योग्य व्यक्तियों की संगत में रहें। कमज़ोरियों को दूर करने में कतई न हिचकें। संकोच और अहंकार आड़े आएंगे, लेकिन प्रयास करें कि अपनी कमी लंबे समय तक भीतर न बनी रहे। किसी की योग्यता से अपनी कमी को दूर करना मुफ्त का सौदा है। इसे केवल देखकर भी पूरा कर सकते हैं। हो सकता है सामने वाला सहयोग न करे, लेकिन यदि आपकी तैयारी पूरी है तो वह अपनी अच्छाई को आपके भीतर उतरने से रोक नहीं सकेगा। अच्छाइयां भी तुरंत संक्रमित हो जाती हैं। ढूंढ-ढूंढकर अच्छे लोगों की संगत में रहें। हम कोई अच्छा काम करते हैं तो हमारी इच्छा होती है कि लोग हमें इसका श्रेय दें, लेकिन कई बार कुछ लोग श्रेय देने में कंजूस होते हैं। जब कभी अपने को श्रेय न मिले तो उसकी पूर्ति दूसरों की अच्छाई से कर लें। यह फायदे का सौदा होगा।

फतेहगढ़। सांसद मुकेश राजपूत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

कागल-महा.। हसन सो मुश्रीफ,जल संपदा मंत्री,महा. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजेश्री। साथ हैं ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. सुभाष तथा अन्य।

कपडवंज-गुज.। सी.एच.सी. हॉस्पिटल के मुख्य डॉ. नीरव के साथ ज्ञानचर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. माला।

बोपोडी-पुणे। राजयोग शिविर के बाद समूह चित्र में सभी पुलिस निरीक्षक, ब्र.कु. डॉ. शर्मिला तथा ब्र.कु. रेषमा।

सम्बलपुर। विधायक रोहित पुजारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती।

शिनोर-गुज.। जी.ई.बी. के चीफ इंजीनियर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. जगीशा।

कथा सरिता

विकास के सूत्र

एक व्यक्ति जंगल में लकड़ी तोड़ने गया। एक पेड़ पर उसको रेशम के तितली का कुकून दिखा। कुकून के ऊपरी भाग में एक छिद्र दिख रहा था। वह कई घंटे बैठे देखता रहा तो पाया कि कुकून में मौजूद रेशम की तितली की उम्र कुछ ही घंटे है और वह उस छेद से बाहर आने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। कुछ देर बाद उसने प्रयत्न करना छोड़ दिया, उस व्यक्ति ने अनुमान लगाया कि तितली ने जहाँ तक हो सका दम लगाया और अंत में हार मानकर बैठ गई। उसने तितली की मदद करने की सोची। जेब से चाकू निकालकर उसने शेष कुकून को काट फेंका। वह तितली बाहर आयी तो उसने पाया कि तितली का शरीर बेडौल है और उसके पंख भी छोटे और कमज़ोर हैं।

वह आदमी अब उस तितली की ओर ध्यान से इस आशा से देखने लगा कि कब वह अपने पंख खोलेगी और उनके सहारे स्वच्छंदता से उड़ सकेगी, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह तितली उड़ ही न सकी। शाम ढ़लने को आई लेकिन तितली असहाय ढ़ंग से रेंगने के सिवा कुछ नहीं कर सकी। वह अधबने पंखों के सहारे कुछ दूरी तक अपने को धकेल पाती। उस व्यक्ति ने दया वश जल्दबाज़ी की। वह यह समझ न सका कि कुकून व उसके छेद से निकलने के दौरान का संघर्ष तितली के पंख को मजबूत बनाने का प्रकृति का तरीका है। इस परेशानी और संघर्ष के जरिये ही तितली के शरीर में स्थित द्रव्य उसके पंखों की जड़ों तक पहुँचता है, जिसके कारण कुकून से मुक्त होने पर तितली को उड़ने की शक्ति मिलती है। उस व्यक्ति को प्रकृति में व्याप्त चेतना के प्रत्यक्ष अनुभव के साथ ही अपनी गलती का भी अहसास हुआ। मनुष्य जीवन भी इसी प्रकार का है। इसके संघर्ष और परेशानियां अर्थहीन नहीं हैं। हर विपरीत प्रतीत होने वाली घटना के पीछे का हेतु हमारा उत्कर्ष ही होता है। अज्ञानता के कारण हम दूरदर्शिता से घटनाओं को समझ नहीं पाते।

तर्क से परे ईश्वरीय शक्ति

एक मैदान में महात्मा प्रवचन दे रहे थे। वे कह रहे थे कि भगवान मनुष्य को मार्गदर्शन देने के लिए पृथ्वी पर अवतार लेते हैं। बीच में ही एक युवक ने हाथ ऊपर किया और खड़े होकर बोला-मुझे इस बात पर भरोसा नहीं होता कि परमेश्वर जो सर्वशक्तिमान है, वह मानव के रूप में पृथ्वी पर जन्म लेता है। महात्मा ने जवाब दिया-भाई, भगवान सब कुछ कर सकते हैं, फिर उनकी लीला उनकी कृपा से ही समझ में आती है। युवक थोड़ी देर महात्मा की बात पर विचार कर घर लौट आया और अपने कामों में लग गया। शाम ढ़ल चुकी थी और मौसम बिगड़ने लगा। बारिश, आंधी और तूफान का माहौल बनने लगा। तभी युवक ने खिड़की से देखा कि कुछ हंसों का दल उसके आंगन में उतरा है। बरसात और आंधी में अप्रत्याशित मेहमानों को देखकर वह चिंतित हो उठा। सोचा इन्हें जल्द ही गैरेज में नहीं किया तो ये तूफान में मारे जायेंगे। वह नीचे उतरा, गैराज का दरवाजा खोला और उन्हें भीतर करने का प्रयत्न करने लगा। घबराए हंस इधर-उधर भाग रहे थे। युवक रोटी लाया और उन्हें खाने का लालच भी दिया लेकिन कोई असर नहीं पड़ा। कुछ सोचकर युवक दौड़कर अपने कमरे में गया और सफेद चादर लपेटी, माथे पर कपड़े और कार्डबोर्ड की मदद से हंस जैसा सिर बनाया व इस भेष में नीचे उतरा। कुछ देर बाहर खड़ा रहा और फिर गैरेज की ओर बढ़ा। एक-एक कर हंस उसके पीछे गैरेज में घुस गए। इस प्रकार हंसों को सुरक्षित पहुँचाने के बाद यकायक युवक के ज़हन में महात्मा के प्रवचन की बात याद आई की मानव को बचाने के लिए भगवान पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। हंसों को बचाने के लिए स्वयं के प्रयत्नों से उसे भगवान के अवतरण का रहस्य प्रत्यक्ष समझ में आ गया था। शायद इसीलिए कहा जाता है कि परमेश्वर के कार्य तर्क एवं विचार की पकड़ से परे होते हैं। उसे समझने के लिए प्रज्ञा की आवश्यकता होती है।

भाव दूषित हों तो साधना बेकार

एक संत के शुद्ध भक्तिमय जीवन की बड़ी ख्याति थी। वे प्रतिदिन नियमित जप-ध्यान करते, मंदिर में दर्शन करने जाते। एक दिन उन्हें स्वप्न आया। उन्होंने देखा कि उनकी मृत्यु हो चुकी है और वे एक देवदूत के सामने खड़े हैं। देवदूत सब मृत लोगों से उनके किए शुभ-अशुभ कर्मों का ब्यौरा मांग रहा है। काफी देर बाद जब उनकी बारी आई, तो उसने पूछा-आप बताएं आपने जीवन में क्या अच्छे कार्य किये, जिनका आपको पुण्य मिला हो? संत सोच में पड़ गए, मेरा तो सारा जीवन ही पुण्य कार्यों में व्यतीत हुआ है, मैं कौन सा एक काम बताऊँ। फिर बोले-मैं पाँच बार देश की तीर्थयात्रा कर चुका हूँ। देवदूत बोला-आपने तीर्थयात्राएं तो कीं, लेकिन आप अपने इस कार्य का जिक्र हर व्यक्ति से करते रहे। इसके कारण आपके सारे पुण्य नष्ट हो गए। इसके सिवा आपने कोई पुण्य का कार्य किया हो तो बताएं?

संत को भारी ग्लानि हुई। कुछ हिम्मत कर उन्होंने कहा-मैं प्रतिदिन भगवान का ध्यान और उनके नाम का स्मरण करता था। देवदूत ने कहा-जब आप ध्यान करते और कोई दूसरा व्यक्ति वहाँ आता तो आप कुछ अधिक समय तक जप-तप-ध्यान में बैठते। अब संत का ह्दय कांप गया। उन्हें लगा कि उनकी अब तक की सारी तपस्या बेकार चली गई। देवदूत ने कहा-अब आप कोई और पुण्य का कर्म बताएं? संत को कोई ऐसा कार्य याद नहीं आया। उनकी आँखों में पश्चाताप के आँसू आ गए। इतने में उनकी नींद खुल गई। स्वप्न की घटना से उन्हें अपने मन की छिपी कमजोरियों को परखने का मौका मिला। उन्होंने उसी दिन से सबसे मिलना-जुलना, प्रवचन आदि छोड़ दिए और एकनिष्ठ भाव से साधना में जुट गए। धर्म और अध्यात्म स्तर पर किये गए कर्म भी कई बार प्रदर्शन, नाम और यश आदि सांसारिक कामनाओं से उलझे होते हैं। यदि इनके प्रति सचेष्ट न रहा जाए, तो ये हमारी प्रगति को रोक सकते हैं।

घटनाओं को बेवजह महत्व न दें

मिथिला नरेश जनक ने एक रात स्वप्न में देखा कि किसी राजा ने उनके राज्य पर आक्रमण कर दिया और उन्हें पराजित कर राज्य से निकाल दिया। मात्र कमर पर एक कपड़ा पहने जनक को मिथिला की सीमा से बाहर कर दिया गया। अन्न की तलाश में घूमते-घूमते वे एक अन्नक्षेत्र पहुँचे। वहाँ के सेवक को एक भूखे आदमी को देख दया आ गई। भोजनशाला में जाकर देखा तो वहाँ खिचड़ी समाप्त हो चुकी थी, तभी उन्हें बर्तन में खुरचन लगी दिखी, लेकिन वह भी जल गई थी। जनक को वह खुरचन ही वरदान के समान लगी। वे उसे लेकर ज्यों ही खाने को हुए, एक चील ने झपट्टा मारा और खुरचन जमीन पर गिर पड़ी। चील के पंजे के घाव के दर्द और भूख से व्यथित जनक चिल्ला पड़े और इतने में ही उनकी नींद खुल गई। जागने के बाद वे गहन विचार में पड़ गए। उनका प्रश्न यही था कि वर्तमान की अवस्था सच है या जो उन्होंने स्वप्न देखा था वह सत्य है? मंत्री, वैद्य व ज्योतिषी कोई भी राजा को संतुष्ट नहीं कर सका। ऋषि अष्टावक्र मिथिला में आये थे। जनक से मिलने वे सभा में पहुँचे, तो राजा ने उनसे भी प्रश्न किया-यह सच है या वह? अष्टावक्र ने ध्यान कर सारी स्थिति को जान लिया। वे महाराज से बोले-स्वप्न में भूख का अनुभव हो रहा था, तब क्या आप वहाँ थे? राजा ने उत्तर दिया-तब मैं वहीं पर था। अगला प्रश्न था-अभी आप कहाँ पर हैं? राजा ने कहा-इस समय मैं आपके सामने राजभवन में उपस्थित हूँ। अष्टावक्र ने कहा-राजन, न तो आपकी स्वप्न की अवस्था सही कही जा सकती है, न यह जागृति की या सुषुप्ति की। सत्य तो वह दृष्टा है जो स्वप्न, जागृति और गहरी निद्रा की बदलने वाली अवस्थाओं का साक्षी होता है। इस सत्य में जीवन का फलसफा छिपा है। यदि हम घटनाओं को बेवजह महत्व न दें और अपना चिंतन आत्मतत्व पर रखें तो हमारा जीवन आनंद से भर जायेगा।

मऊ-रानीपुर। प्रान्तीय मेला जलविहार के अवसर पर 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. अमित कुमार, चेयरमैन हरीशचन्द्र आर्य, गुड्डू भाई,प्रधान मऊ देहात, ब्र.कु. शैलजा, ब्र.कु. चित्रा, तथा ब्र.कु. मंजू।

भुज-गुज.। रीक्रियेशन क्लब,जी.एस.ई.सी.एल. और महिला मंडल द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए पावर स्टेशन के चीफ एच.आई. देसाई, क्लब के सदस्य, महिला मंडल के सभासद, ब्र.कु. रक्षा तथा अन्य।

शाहगंज-छत्तरपुर(म.प्र.)। स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत उपस्थित हैं ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. द्रौपदी, नगरपालिका अध्यक्षा चंदा खटीक तथा अन्य।

गोलपारा। पुलिस अधीक्षक नितुल गोगोई को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. भवानी।

गुवाहाटी-उलुबाड़ी। चैतन्य दुर्गा की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक रॉबिन बोर्दोलोई, मेयर अबीर पात्रा तथा ब्र.कु. शीला।

इन्दौर-कालानी नगर। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में विधायक सुदर्शन गुप्ता, पार्षद गोपाल मालू, ब्र.कु. जयन्ती तथा अन्य।

मैसूर। 51 फीट लम्बे व 23 फीट चौड़े पतंग के माध्यम से आध्यात्मिक संदेश दिये जाने को वर्ल्ड अमेजिंग रिकॉर्ड्स में शामिल करके वर्ल्ड अमेजिंग रिकॉर्ड्स के प्रेज़ीडेंट पवन सोलंकी ब्र.कु. लक्ष्मी व ब्र.कु. दीपक को प्रमाण पत्र भेंट करते हुए।

सावधान! कहीं सोच ही शत्रु तो नहीं?

प्रथम भाग में आपने पढ़ा कि किस तरह काम विकार से हमें छुटकारा मिल सकता है। कई बार लोग इसका विरोध भी करेंगे, यहाँ तक कि मानेंगे भी नहीं, लेकिन समझ आपकी अपनी है तो निर्णय आपका है, ये मैंने पहले भी कहा था। इसी श्रृंखला में आज मैं शरीर के द्वितीय तत्व, जल तत्व की चर्चा आपसे करना चाहूँगा। जल तत्व से हमारे शरीर की किडनी, प्रजनन तंत्र व यूरीनरी तंत्र आदि संबंधित हैं। प्राय: देखा जाता है कि जब भी हमारे शरीर में जल या पानी से संबंधित कोई बीमारी आती है तो प्राय: डॉक्टर कहते हैं कि आप समय-समय पर नियमित रूप से पानी का सेवन करते रहें, जिससे पानी की कमी शरीर में ना हो। परंतु इसके बावजूद भी हम कहीं न कहीं संकल्पों के उलझन के कारण ध्यान नहीं रख पाते। विज्ञान कहता है कि जल में एक आकर्षण की शक्ति होती है जो पवित्र संकल्पों के आधार से ही हमें आकर्षित करती है। आप देखिये जब कोई मूर्छित होता है या अचानक गिर पड़ता है तो उसे उठाने के लिए पानी का छिड़काव या फिर पानी पिलाते है। जो व्यक्ति प्राय: किसी न किसी प्रकार के मोह से जुड़ा होता है, वही अचानक होने वाली घटनाओं से आहत होता है और सबसे पहले पानी आदि पीने पर उसका ध्यान नहीं होता, उसे याद दिलाना पड़ता है। ऐसे लोगों को बीच-बीच में ग्लूकोज़ आदि की खुराक दी जाती है। अत: जल तत्व के खराब होने का मुख्य कारण अटैचमेंट या मोह को माना जाता है। जैसे हम कहते हैं बात-बात में कि तुम मेरे खून में बसे हो, इसका अर्थ तो यही हुआ कि कोई भी चीज़ जिससे आप बहुत गहराई से जुड़े हैं अगर उसको तकलीफ होती है तो उसका असर आपके किडनी या यूरीनरी तंत्र पर पड़ता है। जीवात्माओं में पुरुष व महिला दोनों पर इसका समान प्रभाव है। इसको ठीक करने के लिए आपको सबसे पहले पवित्रता धारण करनी है। कहा जाता है कि जब कहीं बाहर से आओ और आपको कुछ ठीक नहीं लग रहा है तो गंगा जल छिड़क लो तो शुद्ध व पवित्र बन जाएंगे। जल को पवित्रता के साथ जोड़ा जाता है, अर्थात् जब हम अपने आपको पवित्र आत्मा के रूप में नहीं देखेंगे तब तक मोह हमारा नष्ट नहीं होगा। पवित्र दृष्टि का मतलब मेरा बेटा, मेरा भतीजा, मेरी बेटी आदि से निकल एक आत्मा के रूप में देखने से पवित्रता आएगी, आपका मोह खत्म होगा, साथ ही साथ आपके शरीर का यूरीनरी सिस्टम सम्पूर्ण रूप से ठीक हो जाएगा। इसलिए पवित्रता के लिए जल का वास्तविक रंग गेरुआ दिखाते हैं, इसलिए सन्यासी लोग इस रंग को धारण करते हैं। इसी क्रम में मैं शरीर के अग्नि तत्व के बारे में चर्चा करना चाहूँगा कि शरीर में मौजूद अग्नि तत्व से हमारा सम्पूर्ण पाचन-तंत्र सम्बन्धित है। आज लोगों का पेट ठीक नहीं रहता, इसका प्रमुख कारण लोग खान-पान को बताते है। मैं आपको यहाँ बताना चाहूँगा कि बहुत लोग बहुत ध्यान रखते हैं कि मैं धुला हुआ खाऊँ, सात्विक खाऊँ, शाकाहारी भोजन लूँ, फिर भी उनका पेट ठीक नहीं रहता। इसका प्रमुख कारण अग्नि तत्व मुख्य रूप से खाने को पचाने के लिए चाहिए जो उसे नहीं मिल रहा है। कई बार जठराग्नि हो जाती है और कई बार मंदाग्नि। इससे खाना पचता नहीं है और वो पेट को खराब कर देता है। कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं, तो इसका अर्थ ये हुआ कि हमें खुशी का सेवन करना चाहिए, परंतु आज सभी नाखुश हैं। अग्नि तत्व के खराब होने का प्रमुख कारण क्रोध है। अब आप कहेंगे कि क्रोध तो मैं नहीं करता लेकिन क्रोध के बाल-बच्चे बहुत हैं, जैसे ईर्ष्या, निंदा, घृणा, नाराज़गी आदि भी आप करते हो तो इसका प्रभाव आपके पाचन तंत्र पर पड़ता है। इसका उदाहरण छोटा बच्चा है जिसका पेट कभी लूज़ नहीं होता क्योंकि वह बहुत खुश रहता है जिसके कारण वो जो खाता है उसको जल्दी पच जाता है, लेकिन हमारी खुशी आज कहीं गायब हो चुकी है चिंता में या फिर तनाव में या किसी अन्य कारण से। तो जब हम खाना खा रहे होते हैं तो चिंता और तनाव को भी साथ में खा रहे होते हैं, इसलिए इसका प्रभाव हमपर जल्दी नज़र आता है। डायबिटीज़ का भी मुख्य कारण यही माना जाता है। डॉक्टर्स भी कहते हैं कि आप खुश रहें तो आपका डायबिटीज़ ठीक रहेगा। हमारे खाने को पचाने के लिए इंसुलिन चाहिए और इंसुलिन को पैदा करने वाले घर को अग्नाशय (अग्नि पैदा करने वाला) कहते हैं। आज हमारा अग्नाशय पूर्णत: निष्क्रिय है। जब हम सक्रिय होते हैं, अर्थात् खुश रहते हैं तो इंसुलिन अच्छी मात्रा में बनता है जो हमारे खाने को पचाने में मदद करता है। जब हम चिंताग्रस्त होते हैं तो इंसुलिन बहुत कम बनता है जो डायबिटीज़ का प्रमुख कारण है। इसलिए कहा जाता है 'खुशी जैसी खुराक नहीं' तो क्या करना है, खुशी की खुराक खाना है और दवाई की खुराक को खत्म करना है। खुशी और सुख दोनों एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। सुख का प्रतीक पीला रंग है, इसलिए लोग अपने पुत्री को खुश और सुखी देखने के लिए कहते हैं कि बेटी के हाथ पीले कर दो। परंतु ऐसा है क्या आज? कोई सुखी है? परंतु प्रतीक अवश्य है, इसलिए पीला फल लोग पेट को ठीक करने के लिए खाते हैं। अग्नि जब जलती है तो उसकी लौ का रंग भी पीला ही होता है। यदि हमें सम्पूर्णत: सुखी होना है तो परमात्मा से सुख की किरणों को अपने अग्नि तत्व के साथ जोड़ना होगा और साथ ही साथ ईर्ष्या, घृणा, निन्दा, परचिंतन से दूर रहना होगा। -क्रमश: **-ब्र.कु. अनुज, दिल्ली**

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171
Tara skay Channel no.-192
AirtelChannel no.- 686

Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in

Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day

अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना–ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

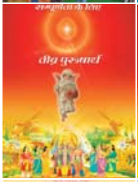

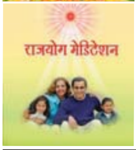

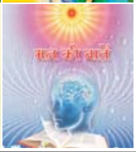

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न:- मैं गृहस्थी माता हूँ। मेरे दो बेटे हैं एक 20 साल का और दूसरा 24 साल का। छोटा लड़का शराब का आदि बन गया है और बड़े लड़के को छुआछूत की बीमारी है। वह सारे दिन स्नान करता रहता है। दोनों कोई भी काम नहीं करते। मेरे को केवल मकान का किराया आता है। पति नहीं है। मैं क्या करूँ, परेशान हूँ?

उत्तर:- आपने ही तो भगवान से माँगा था कि भगवान लड़के देना, लड़की नहीं। आपने ये नहीं कहा था कि भगवान चरित्रवान लड़के देना। कोई बात नहीं, आप हिम्मत ना हारें। योगबल से सब ठीक हो जाता है।

कलियुग का प्रभाव आज के मनुष्यों पर बहुत भारी पड़ रहा है। उसमें भी युवक इसके ज़्यादा शिकार हो रहे हैं। चारों ओर शराब की दुकानें खुलती जा रही हैं और कई युवक बुरे संग में आकर इसके शिकार हो रहे हैं। आप तो राजयोग करती हैं। आपको भगवान की मदद अवश्य मिलती रहेगी और आपका परमपिता आपकी पालना करता ही रहेगा। प्रथम तो आप बच्चों को योगयुक्त भोजन खिलायें। भोजन बनाते समय यह बार-बार अभ्यास करें कि मैं परमपवित्र आत्मा हूँ और शिव बाबा मेरे साथ हैं। दूसरी बात 3 मास तक 1 घण्टा प्रतिदिन सवेरे और 1 घण्टा शाम को राजयोग का अभ्यास करें। योग से पूर्व दो स्वमान 7 बार याद करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्नविनाशक हूँ। अपने दोनों बच्चों को आत्मा देखते हुए ये संकल्प करें कि ये दोनों बहुत अच्छी आत्माएँ हैं और उन्हें 10 मिनट वायब्रेशन भी दें। ये अभ्यास सवेरे शाम दो बार करें। हमें पूर्ण विश्वास है कि 3 मास में ही आपके बच्चे चरित्रवान बन जाएँगे।

प्रश्न:- मैं थोड़े समय से ज्ञान में हूँ। मेरे जीवन में कठिन समय चल रहा है। मेरी नौकरी भी चली गयी है। पति को बिज़नेस में बहुत घाटा होने लगा है। उनका मन भी उचटा-उचटा रहता है। क्या उन्हें अपना पुराना बिजनेस छोड़कर कोई नया बिज़नेस शुरु करना चाहिए?

उत्तर:- मनुष्य के जीवन में कर्मगति के अनुसार कभी-कभी बुरा समय आ जाता है। उसको पार करना चाहिए हिम्मत से और शिवबाबा में विश्वास रखते हुए। यदि बुरा समय आने पर हम निगेटिव हो जाते हैं तो हमारी स्थिति भी बिगड़ जाती है।

आप अपने चित्त को शांत करें और ये संकल्प करें कि ये कठिन समय जल्दी ही समाप्त हो जाएगा और हमारे अच्छे दिन जल्दी ही आ जाएँगे। बुरे दिन सदा ही नहीं रहते और रोज़ सवेरे आँख खुलते ही आप दोनों ये अभ्यास करें कि मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत सुखी हूँ, हमारे बहुत अच्छे दिन चल रहे हैं...ये तीनों संकल्प 5 बार करें।

आपके जीवन में ये जो विघ्न आए हैं, इसे दूर करने के लिए आप एक 21 दिन की विघ्न विनाशक भट्ठी करें। एक घण्टा प्रतिदिन पॉवरफुल योग करें। योग से पहले 7 बार दो स्वमान याद करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और विघ्न विनाशक हूँ।

अभी कोई नया बिज़नेस प्रारंभ ना करें क्योंकि ऐसे समय पर जो भी काम करेंगे वो अच्छा नहीं चलेगा। इसलिये अच्छे समय का इंतज़ार करें।

प्रश्न:- मैं कुमारी हूँ। मैं डिप्रेशन में आ गयी हूँ। मेरी मानसिक स्थिति गिरती जा रही है। मैंने कई इन्टरव्यू दिए लेकिन सफलता नहीं मिल रही,क्या करूँ?

उत्तर:- डिप्रेशन मन की बहुत बुरी स्थिति है, स्वयं को इससे बचाना है क्योंकि इससे तेज़ी से आपकी इनर पॉवर नष्ट होती जाएगी। इससे बचने के लिए आप रोज़ सवेरे अवश्य उठें। उठते ही सुंदर-सुंदर संकल्प करें और अच्छे स्वमान का अभ्यास करें और उसके बाद ईश्वरीय महावाक्य सुनने के लिए सेवाकेन्द्र पर जाएँ। बहुत अच्छा रहेगा कि उठते ही 108 बार लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ और रात को सोने से पूर्व 108 बार लिखें कि मैं एक महान आत्मा हूँ।

इस समय युवकों के साथ जो कुछ हो रहा है वो ये है कि ब्रेन की शक्तियाँ तो कमज़ोर पड़ गयी हैं और पढ़ाई का दबाव या नौकरी ना मिलने का दबाव या अंदर की वासनाओं का दबाव अत्यधिक रहता है। इसलिये जीवन का सारा खेल बिगड़ने लगता है, इसलिये स्वयं को बहुत सरलचित्त रखते हुए खुशी में रहने का प्रयास करना है।

अच्छी नौकरी प्राप्त करने के लिए आप एक 21 दिन की योग भट्ठी कर लें। प्रतिदिन एक घण्टा पॉवरफुल योग करें। आपको जो टाइम अच्छा लगे, वही चुन लें और योग से पूर्व दो स्वमान का अभ्यास 7 बार करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। इससे आपको आपका लक्ष्य मिल जाएगा।

प्रश्न:- मेरा नाम हंसराज हंस है। मैं इस वर्ष 12वीं का एग्ज़ाम देने वाला हूँ लेकिन मेरे अंदर ये चिंता है कि क्या होगा? मेरे नंबर अच्छे आएँ, उसके लिये कुछ उपाय बताएँ?

उत्तर:- हमारे संकल्प ही हमारे भविष्य का निर्माण करते हैं। यदि आपके मन में बार-बार निगेटिव संकल्प चलेंगे तो आपका भविष्य भी निगेटिव हो जाएगा। इसलिये आप वही सोचो जो आप चाहते हो। मन में डर रखना, अविश्वास रखना हमारे भविष्य पर गहरा प्रभाव डालता है। जो मनुष्य जितना आत्मविश्वासी है और दृढ़ संकल्पधारी है, सफलता उतनी ही उसके समीप रहती है।

आप बहुत अच्छी मेहनत करें। अभी तो छ: मास का समय बाकी है और रोज़ सवेरे उठते ही ये संकल्प करें कि मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूँ...मैं बुद्धिमान हूँ...मैं चरित्रवान हूँ...मैं एकाग्रचित्त हूँ...साथ ही साथ सवेरे के समय ही अपने रिज़ल्ट का एक विज़न बनाओ कि मेरे इतने मार्क्स आयेंगे। ऐसा चित्र बनाओ कि मैं अपनी मार्कशीट देख रहा हूँ और मेरे टोटल मार्क्स इतने हैं और उसे देखकर उसका आनंद लें कि इतने आ गए हैं।सवेरे के समय ही मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है - ये दोनों संकल्प 7 बार किया करो और प्रतिदन आधा-आधा घण्टा राजयोग का अभ्यास अवश्य किया करो। इससे आपका मन शांत रहेगा और बौद्धिक विकास होगा। बस आत्मविश्वास के साथ बढ़ते जाओ। आपको मनचाहा परिणाम प्राप्त हो जाएगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

''हमने पवित्रता को अपनाया है''

-ब्र.कु.सूर्य, माउण्ट आबू।

पवित्रता के बल से तुम जो चाहो कर सकते हो - ये ईश्वरीय महावाक्य हमें हमारी पवित्रता की याद दिलाते हैं। ''पवित्रता'' शब्द ही कितनी निर्मलता के प्रकम्पन प्रवाहित करता है। पवित्रता ही दिव्यता है। इस दिव्यता को प्राप्त करके आत्मा पूर्णतया प्रसन्नचित्त हो उठती है। इससे अन्तरमन की सम्पूर्ण अग्नि शान्त हो जाती है। ऐसी महानतम पवित्रता की ओर हमारे कदम अग्रसर हैं। अब हम अपने इस लक्ष्य में सम्पूर्णता कैसे प्राप्त करें, इसके लिए कुछ अनुभव-युक्त विचारों का उल्लेख यहाँ करेंगे। ''पवित्रता के प्रत्येक राही'' को इस प्रकार के विचारों से अपने जीवन में दृढ़ता लानी चाहिए।

जिसने पवित्रता की आज्ञा दी है, उसने शक्ति भी दी है -

ज्ञान के सागर, परम शिक्षक शिव पिता का इस कलियुगी संघर्षात्मक वातावरण में पवित्रता की आज्ञा देना लोगों को समुद्र लाँघने जैसा अवश्य लगता है, परन्तु आज्ञा देने वाले को इसकी कठिनाइयों का सम्पूर्ण ज्ञान है। और क्योंकि वह सम्पूर्ण सृष्टि को पावन बनाने आये हैं अत: इस आज्ञा के साथ ही उन्होंने शक्ति भी दी है। जिन आत्माओं ने उनकी इस आज्ञा को शिरोधार्य किया, उन पर ईश्वरीय शक्तियों की किरणें फैलने लगती हैं। अत: ईश्वरीय शक्ति के समक्ष सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करना वास्तव में ही सरल कार्य है।

हमने पवित्रता का पथ स्वेच्छा से चुना है।

प्रत्येक ईश्वरीय वत्स जानता है कि उसने यह तपस्या का मार्ग स्वेच्छा से चुना है। और जो कार्य स्वेच्छा से चुना जाता है, चाहे वह कितना ही कठिन क्यों न हो, सरलता से कर लिया जाता है। उसमें आने वाली कठिनाइयाँ भी आनन्ददायक लगती हैं। उसमें चाहे कितने भी कष्ट आयें, उन्हें सहज ही पार कर लिया जाता है। तो जबकि हमने पूर्ण स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है तब भला उसमें अब भारीपन क्यों? प्रत्येक आत्मा जानती है कि पवित्र राहों पर चलकर ही हम नीचे उतरें हैं, हमने दु:ख अशान्ति के बीज बोयें हैं, अपनी चैन खोई है, इसीलिए तो अब हमने उत्थान का यह सर्वश्रेष्ठ रास्ता चुना है। तो हमें भी इस रास्ते में आने वाली कठिनाइयों में आनन्द अनुभव करना है। आगे बढ़ने का लक्ष्य रखेंगे तो नि:सन्देह आगे बढ़ते जाएंगे।

जिस पेड़ के आम नहीं खाने, उस पेड़ के पत्ते क्यों गिनें!

हमने भी व्रत लिया है, उस महाशत्रु रावण को विश्व से निष्कासित करने का। सम्पूर्ण पवित्रता हमारा व्रत है और किसी भी कीमत पर हम इस व्रत को निभायेंगे। इस व्रत को निभाने में ही आनंद है और यह व्रत ही शक्ति देता है। पवित्र संकल्प का भी हमारा व्रत है तो हमें प्रतिदिन अपने संकल्पों को दृढ़ करना होगा कि चाहे हमारे प्राण भी चले जाएँ परन्तु हमारा ये सम्पूर्ण पवित्रता का प्रण अमिट रहेगा। तब ही माया को ललकारने की शक्ति हम जीवन में अनुभव कर सकेंगे।

हम कलियुग की विकारी राहें त्याग चुके। मन से हमने उससे किनारा कर लिया। जबकि अब हमें पुन: उन राहों पर नहीं लौटना है। हम उधर बार-बार मुड़कर क्यों देखें! बार-बार उधर देखना स्पष्ट करता है कि हम मार्ग छोड़ तो आये लेकिन हमारी सूक्ष्म रूचि अभी उधर ही लगी हुई है। अत: जिन महान आत्माओं को सम्पूर्ण पवित्रता का लक्ष्य साध्य करना है, उन्हें इस अंतर-मन में छुपी हुई बाह्य आकर्षण की रूचि को भस्मीभूत कर देना चाहिए। और बार-बार चिन्तन करना चाहिए कि जिस पेड़ के आम खाने से हम नर्क में जा गिरे थे, तो अब उसके पत्ते गिनने में क्यों अपने अनमोल क्षण व्यतीत करें।

हमने पवित्रता का व्रत लिया है ।

भारतवर्ष में व्रत रखने की प्रथा अति प्राचीन है और आज तक भी माताएँ व्रत में पूर्ण आस्था रखते हुए उसके नियमों की अवहेलना नहीं करतीं। निर्जल व्रत रखने वाली नारी, मरते दम तक भी जल ग्रहण करना नहीं चाहती। इतिहास में भी कई वीरों के व्रत प्रसिद्ध हैं। कौन नहीं जानता मेवाड़ के महाराणा प्रताप ने अपने व्रत पर अडिग रहकर जंगलों में अनेक कष्टों का आलिंगन सहर्ष किया था। उनका व्रत था कि जब तक मैं मेवाड़ को स्वतंत्र नहीं करा लूंगा, शैय्या पर नहीं सोऊँगा, महलों में नहीं रहूँगा, और सोने चाँदी के बर्तनों में भोजन नहीं करूँगा। और इतिहास साक्षी है कि उन्होंने विपदाएँ देखी, परन्तु प्रतिज्ञा नहीं तोड़ी। हमने भी व्रत लिया है, उस महाशत्रु रावण को विश्व से निष्कासित करने का। सम्पूर्ण पवित्रता हमारा व्रत है और किसी भी कीमत पर हम इस व्रत को निभायेंगे। इस व्रत को निभाने में ही आनंद है और यह व्रत ही शक्ति देता है। पवित्र संकल्प का भी हमारा व्रत है तो हमें प्रतिदिन अपने संकल्पों को दृढ़ करना होगा कि चाहे हमारे प्राण भी चले जाएँ परन्तु हमारा ये सम्पूर्ण पवित्रता का प्रण अमिट रहेगा। तब ही माया को ललकारने की शक्ति हम जीवन में अनुभव कर सकेंगे।

स्मृति को बढ़ावें।

जैसे प्रत्येक ब्रह्मावत्स को यह स्मृति दृढ़ हो गई है कि हम ब्रह्माकुमार कुमारी हैं, हमारा खान-पान शुद्ध है। यदि स्वप्न में भी हमें कोई अशुद्ध भोजन दे तो हमारी चेतना इतनी जागृत हो चुकी है कि हम उसे स्वीकार नहीं करेंगे। स्वप्न में भी हमें याद रहता है कि ये हमारा भोजन नहीं है। इसी प्रकार हम यह स्मृति दृढ़ करते चलें कि मैं ''पवित्र आत्मा हूँ'', और अपवित्रता मेरा स्वधर्म नहीं है।

यह स्मृति जैसे दृढ़ होती जायेगी, हमारा जीवन स्वप्नों तक भी निर्मल होता जाएगा और स्मृति बार-बार के चिन्तन से ही दृढ़ होती है।

पवित्रता ईश्वरीय वरदान है।

परम पवित्र परमात्मा हम आत्माओं के लिए पवित्रता का वरदान लाये हैं। जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, उन पर उन्होंने ये वरदान लुटा दिया। अब हमारा कर्त्तव्य है इस वरदान को सुरक्षित रखना। यदि हम इस वरदान को समा नहीं पाते तो हमें अन्य वरदान भला कैसे प्राप्त होंगे! और जिन आत्माओं ने इस सर्वश्रेष्ठ वरदान को पूर्णतया सम्भाला है, उन्हें जीवन में अन्य वरदानों की भी प्राप्ति हुई है। अत: जो ईश्वरीय वरदान हमें मिले हैं, कम से कम हम उन्हें सुरक्षित रखना तो जानें।

- क्रमश:

जहाँ रुहानी ... पेज 1 का शेष

होना चाहिये, लेकिन हमनें औरों के हाथ में दे दिया है। हर व्यक्ति को खुशी, शांति, प्रेम, आनंद चाहिये, वो उसे पसंद है। लेकिन छोटी-छोटी बातों में हम अपनी खुशी गँवा देते हैं।

उन्होंने कहा कि पहले हमारा मन बीमार होता है फिर शरीर बीमार होता है जो मेमोरी हमारी है वो पास्ट की मेमोरी आगे जन्म में भी चलती है, वो संस्कार भी आगे के जन्म में चलते हैं। शरीर तो वो खत्म हो जाता है लेकिन वो कोई एन्टीटी है जो साथ चलती है, वो हमारे शरीर से भी ज़्यादा शक्तिशाली है, जिसे कॉन्शियनेस कहो, आत्मा कहो, वैल्यु सिस्टम कहो, नूर कहो या एनर्जी कहो।

इस कार्यक्रम में अहमदाबाद महानगर के 2000 से भी ज़्यादा डॉक्टरों ने पूरे दिन के सत्रों का लाभ उठाया। मेडिकल विंग गुजरात के संयुक्त क्षेत्रीय संयोजक डॉ. मुकेश पटेल, एक्ज़ीक्युटिव मेम्बर डॉ. अंकित पटेल और मेडिकल विंग की पूरी टीम के सहयोग से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। फॉलो-अप कार्यक्रम में शहर के विभिन्न सेन्टरों पर डॉक्टर्स राजयोग शिविर का लाभ ले रहे हैं।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। हौज काज़ी पुलिस स्टेशन में ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में इंस्पेक्टर जरनैल सिंह, सब इंस्पेक्टर, ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. अनीता।

दिल्ली-स्वरूप नगर। बी.जे.पी. स्वास्थ्य प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय सह संयोजक दिनेश उपाध्याय व मथुरा के प्रख्यात कथा वाचक राकेश भारद्वाज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी। साथ हैं ब्र.कु. शारदा।

मेरठ-दिल्ली रोड। 'खुशनुमा जीवन' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू। साथ हैं विधायक सतप्रकाश अग्रवाल, ब्र.कु.आशा तथा ब्र.कु.श्वेता।

धमतरी-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक गुरुमुख सिंह होरा, ब्र.कु. सरिता, दीपक लखोटिया, सम्पादक,प्रखर समाचार, राजेश शर्मा,समाजसेवी, विनोद पाण्डेय,जिला अध्यक्ष एवं स्काउट एंड गाइड तथा विकास शर्मा,कांग्रेसी नेता।

फरीदाबाद। पूर्व मेयर सीमा त्रिखा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

दिल्ली-लोधी रोड। पवन हंस लिमिटेड,नागर विमानन मंत्रालय भारत सरकार के केन्द्रीय कार्यालय में 'राजयोग द्वारा तनाव प्रबंधन' पर प्रवचन के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरीजा, आर.बी. कुशवाहा, उपमहाप्रबंधक, अशोक यादव,उपमहाप्रबंधक तथा अन्य प्रतिभागी।

कानपुर-जरौली। 'नारी सुरक्षा हमारी सुरक्षा कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित अविनाश सिंह,जिला अपर अधिकारी, रामदत्त बागला, डिप्युटी डायरेक्टर,कृषि विभाग, डॉ. सविता तथा ब्र.कु. दुलारी।

मछलीपट्टनम। निर्विघ्न स्थिति साधना भट्टी व पर्ल ज्युबली कार्यक्रम में केक कटिंग करते हुए ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू, ब्र.कु. कुलदीप, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. शान्ता, मूर्ती जी, बाबा प्रसाद,चेयरमैन व कमिश्नर, दिवाकर जी तथा अन्य।

कुशल प्रशासक नि:स्वार्थ व भावना प्रधान होगा

रायपुर-छ.ग.। गोलमेज सम्मेलन में उपस्थित प्रो. प्रदीप जोशी, न्यायमूर्ति लाल चन्द भादू, राम प्रकाश, सरजियस मिंज, जवाहर श्रीवास्तव, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. कमला, कौशलेन्द्र सिंह, सी.डी. टण्डन, श्रीमती किरण सिंह, ए.के. सिंघल तथा अन्य।

रायपुर-छ.ग.। प्रशासन में उत्कृष्टता लाने के लिए अपनी सोच को सकारात्मक बनाना होगा। प्रशासक के अंदर सेवा का भाव हो, वह अपने को सेवक और जनता को स्वामी समझे। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'प्रशासन में उत्कृष्टता' विषय पर आयोजित मासिक गोलमेज परिचर्चा कार्यक्रम में लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप जोशी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि प्रशासक सिर्फ बोलने वाला न हो, बल्कि स्वयं करके दिखाने वाला हो क्योंकि उसके आचरण का उसके अधीनस्थ लोगों पर गहरा असर पड़ता है। उसका व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि सभी उसके कार्यों से सन्तुष्ट रहें।

इस अवसर पर अपने भाव व्यक्त करते हुए विधि आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति लाल चन्द भादू ने कहा कि प्रशासक के जीवन में अनुशासन का होना ज़रूरी है, साथ ही उसका स्वभाव शान्तिपूर्ण हो ताकि कार्यालय में शान्ति बनी रहे। इसके लिए आवश्यक है कि उसके जीवन में आध्यात्मिकता हो।

प्रधान वन संरक्षक राम प्रकाश ने कहा कि एक अच्छा प्रशासक वह है जो टीम भावना से काम करे और जिसके अंदर सबको साथ लेकर चलने की क्षमता हो। उसके अधीनस्थ काम करने वाले सभी लोगों को लगना चाहिए कि उनकी भी उपयोगिता है।

मुख्य सूचना आयुक्त सरजियस मिंज ने कहा कि अच्छे प्रशासक को व्यावहारिक होना बहुत ज़रूरी है। वह जब कार्यक्रम बनाए तो समाज के सबसे निचले तबके के लोगों को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाए। उन्होंने कहा कि मनुष्य में असीमित क्षमताएँ होती हैं, केवल उसे अवसर मिलने की ज़रूरत होती है।

सूचना आयुक्त जवाहर श्रीवास्तव ने कहा कि प्रशासक भी समाज का ही हिस्सा होता है। उसे अपने को समाज से अलग हटकर नहीं समझना चाहिए। जब तक समाज में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना नहीं की जाएगी, तब तक प्रशासन में उत्कृष्टता नहीं आ सकती।

ब्र.कु. मंजू,बिलासपुर ने कहा कि प्रशासन सिर्फ नियमों से नहीं चल सकता। प्रशासन को चलाने के लिए बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ भावनात्मक क्षमता का होना भी ज़रूरी है। एक अच्छे प्रशासक में नि:स्वार्थ प्रेम की भावना ज़रूरी है अन्यथा प्रशासन लोकोपयोगी नहीं बन सकेगा। उन्होंने कहा कि एक अच्छा प्रशासक वही बन सकता है जिसमें स्वयं के अंदर शासन करने की क्षमता और नैतिकता हो।

इस कार्यक्रम के दौरान क्षेत्रीय प्रशासिका ब्र.कु. कमला, मुख्य वन संरक्षक कौशलेन्द्र सिंह, एंटी करप्शन ब्यूरो के अति. पुलिस अधीक्षक सी.डी. टण्डन, महिला एवं बाल विकास विभाग की संचालिका श्रीमती किरण सिंह, विधि विभाग के अति. सचिव ए.के. सिंघल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

'अचल' सम्पत्ति चली महाप्रयाण को...

चण्डीगढ़। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अचल सम्पत्ति, भगवान के कार्य में अपने गुणों को चल सम्पत्ति के रूप में प्रयोग करने वाली दृढ़ता की प्रतिमूर्ति अचल दीदी महाप्रयाण की ओर चल पड़ी। क्षेत्रीय प्रमुख राजयोगिनी ब्र.कु. अचल दीदी जी को भावभीनी विदाई देने के लिए हज़ारों की संख्या में शहर के लोग व समस्त भारत से संस्था के श्रद्धालु राजयोग भवन सेक्टर 33 ए में सवेरे से ही इकट्ठे होने लगे थे। राजयोग भवन के म्यूज़ियम में दीदी जी के पार्थिव देह को अन्तिम दर्शनों के लिए रखा गया था। दोपहर 1 बजे शान्ति यात्रा के रूप में उनकी देह को राजयोग भवन से क्रीमेशन ग्राउंड सेक्टर 25 तक पहुँचाया गया, जहाँ हज़ारों लोगों की उपस्थिति में उनके पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार किया गया।

दीदी जी ने अपनी नश्वर देह का मंगलवार 7 अक्टूबर को दोपहर 2.20 शनिवार 4 अक्टूबर को उन्हें ब्रेन हैमरेज होने पर इंसकोल अस्पताल सेक्टर 34 में दाखिल कराया गया था और सोमवार को उन्हें पी.जी.आई. में स्थानांतरित किया गया था। वे ब्रह्माकुमारी संस्था के चण्डीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर व उत्तराखण्ड स्थित सैकड़ों सेवाकेन्द्रों की 1997 से प्रमुख थीं। 1953 में वे अपनी युवा अवस्था में शीघ्र ही मानवता के आध्यात्मिक उत्थान के लिए अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दिया। 1968 में आप चण्डीगढ़ में स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका नियुक्त हुए और लगातार 45 वर्षों तक आपने चण्डीगढ़ में रहते हुए सारे उत्तर भारत की आध्यात्मिक सेवा की।

समाज सेवा प्रभाग के वाइस चेयरपर्सन दिल्ली से संस्था के अतिरिक्त मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन, जर्मनी से यूरोपियन देशों की निर्देशिका ब्र.कु. सुदेश, माउंट आबू से शिक्षा प्रभाग के वाइस चेयरमैन ब्र.कु. मृत्युंजय, ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक ब्र.कु. प्रताप मिड्ढा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा व सुरक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. अशोक गाबा, जयपुर से सेवाकेन्द्र प्रभारी हज़ारों की संख्या में लोगों ने उनके अन्तिम संस्कार में भाग लिया।

पूर्व केन्द्रीय रेल मंत्री पवन बंसल, पूर्व सांसद सत्यपाल जैन, पंजाब व हरियाणा हाईकोर्ट के जस्टिस दया चौधरी, जस्टिस राजन गुप्ता सहित शहर के कई गणमान्य लोगों द्वारा इस मौके पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। संस्था के अतिरिक्त मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि अचल दीदी का आदर्शमय जीवन सबके लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहेगा। हम उनके पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लें। उन्होंने ममतामयी माँ की तरह सबको स्नेह व सम्मान दिया। उनके पदचिन्हों पर चलकर मानवता की सच्ची सेवा में लग जाना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजली देना होगा। जर्मनी से यूरोपियन देशों की निदेशिका ब्र.कु. सुदेश ने कहा कि मूल्यों से परिपूर्ण दीदी का समस्त जीवन लोगों को गुणवान, मूल्यवान व चरित्रवान बनाने में बीता। वह सबको सच्चाई व ईमानदारी से चलाने के लिए प्रेरित करती थीं। वे निर्माणता व सहनशीलता की चैतन्य मूरत थीं, उनमें अद्भुत क्षमाशक्ति थी तथा उनका मन व चित्त सर्व के लिए सदा निर्मल रहा। एक कुशल नेतृत्व का उदाहरण पेश करते हुए हज़ारों लोगों के जीवन में आपने खुशी, शान्ति, प्रेम व आनंद का संचार किया।

चण्डीगढ़। राजयोगिनी अचल दीदी को भावभीनी श्रद्धांजली देते ब्र.कु. भाई-बहनें तथा शहर के गणमान्य जन।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । **विदेश** - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 15th Nov 2014
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।